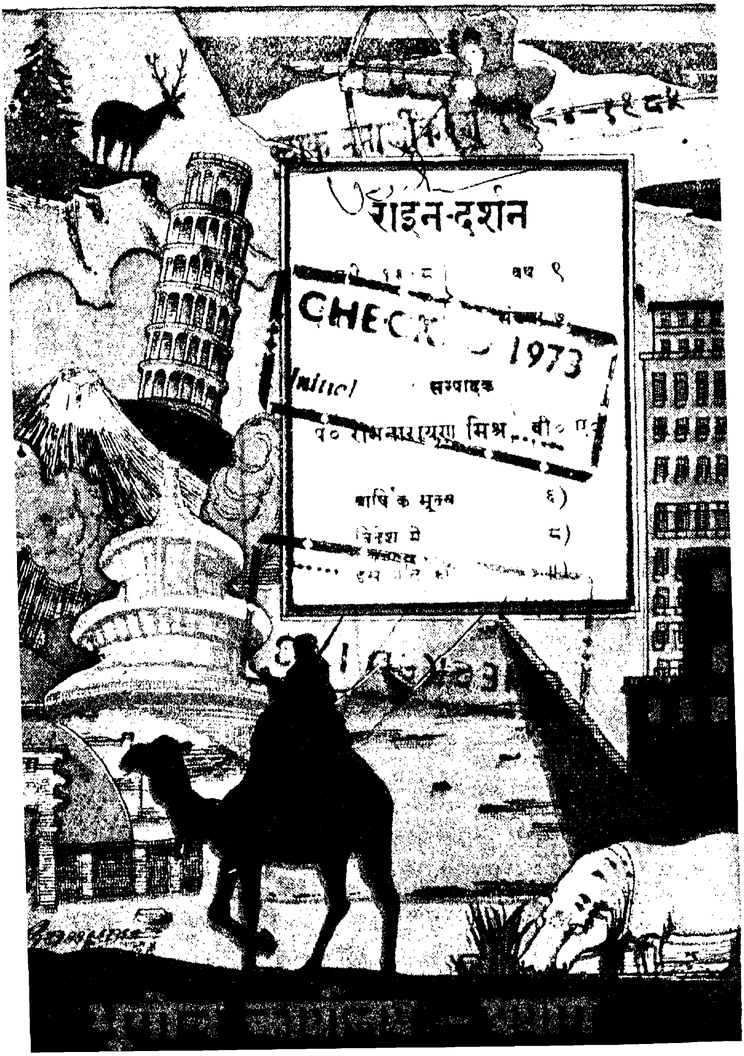
देश दर्शन

पूर्ण संख्या— ९६



राइन-दर्शन

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ६)

विदेश में ८)

विषय-सूची

राइन नदी

राइन नदी योरूप की एक बहुत बड़ी नदी है। यह कई देशों से होकर बहती है इस कारण अन्तर्राष्ट्रीय नदी है। १८४० ई० में जब लूई फिलिप फ्रांस का राजा था और थीर्स प्रधान मंत्री था तो मिस्र के मोहम्मद अली खेदाइव ने एक जहाजी फौजी बेड़ा तयार किया और एक सेना तयार की जिससे कुस्तुन्तुनिया के सूज़रेन गद्दी के लिये भय उत्पन्न हो गया। आवश्यकतानुसार योरूप की शक्तियों में एक प्रकार का विभाजन सा हो गया और वियना तथा बर्लिन की मर्ज़ी के अनुसार रोसी सेना ने फासफोरस पर अधिकार कर लिया। इस पर फ्रांस ने विरोध किया क्योंकि वह मिस्र का साथी था। इंगलैंड ने भी विरोध किया पर उसके लिये लेवेटाइन के हेतु फ्रैंको-मिस्री नीति उसी प्रकार खतरनाक थी जिस प्रकार रूसी-तुर्की नीति थी। रूस के ज़ार ने इंगलैंड को अपनी ओर मिलाने के ध्यान से फासफोरस से अपनी सेना को हटा लिया। इस पर फ्रांस ने देखा कि जिन शक्तियों की बदौलत उसने १८१४ ई० का युद्ध विजय किया था वे ही अब उसके सामने विरोधी रूप में खड़े हैं। राइन क्षेत्र में युद्ध

की सम्भावना देख कर फ्रांस की लड़ाकू भावना जागृति हो उठी। फ्रांस की दशा देख कर जर्मनी में भी राष्ट्रीय जागृति उत्पन्न हो गई यद्यपि जर्मनी कई राज्यों में विभाजित था। समस्त जर्मन प्रदेश बेकर के कथनानुसार युद्ध के लिये तयार हो गया। उसके विरोध में डे मुसेट के कथनानुसार फ्रांस भी तयार हो गया।

फ्रांस का राजा लूई फिलिप के विरुद्ध था। थीर्स प्रधान मंत्री जो युद्ध का अनुयायी था वह प्रधान मंत्री के पद से हटा दिया गया। उसके स्थान पर ग्वीज़ोट प्रधान मंत्री बना। पर फ्रांस में राइन नदी सम्बन्धी जो फौजी गीत बना था उसकी ध्वनि जारी रही। इसी गाने के फल स्वरूप १८७० ई० में जर्मन सेना तयार हुई थी। यह बात याद रखने की है कि मार्सेल्स के युद्ध-गीतों में सबसे प्रसिद्ध गीत वह है जिसे रोगेट डे आइले ने स्ट्रासबर्ग में लिखा था। स्ट्रासबर्ग नगर राइन नदी पर स्थित है। पहिले यह गीत राइन नदी की सेना के गीत के नाम से प्रसिद्ध था

राइन नदी भौगोलिक तथा एतिहासिक दृष्टि से

राइन-दर्शन

योरूप के देशों के मध्य युद्ध का कारण रही है। इस का मुख्य कारण यह है कि उत्तरी योरूप में राइन नदी की स्थिति विशेष महत्व पूर्ण है। विश्चुला और ओडर नदियाँ बड़ी हैं पर वे निचले पर्वतों से निकलती हैं और शीतकाल में बरफ से जमे हुये मैदानों में होकर बहती हैं तथा जमीन के भीतरी समुद्र में गिरती हैं जिसका व्यापारिक महत्व कुछ भी नहीं है। एल्बवेसेर और सीन नदियां अटलांटिक सागर में गिरती हैं पर वे योरूप के मध्य श्रेणियों से निकलती हैं और गहरी घाटियां उन्हें बर्फीले आल्प्स बर्तनों से अलग कर देती हैं।

अकेली राइन नदी ही आल्प्स पर्वतों के ग्लेशियरों से निकलती हैं और वर्षा ऋतु में भी उसमें बरफ का पानी आता रहता है। समुद्र के तट पर जहां वह प्रवेश करती है वहां कई एक डेल्टा बन जाते हैं कलोने के समीप राइन नदी की चौड़ाई ५०० फुट और गहराई ३० फुट रहती है। राइन नदी के द्वारा ही उत्तरी तथा दक्षिणी जर्मनो-प्राकृतिक रूप से मिले हैं और अधिक पूर्व में बर्लिन प्रशन तथा वियना के आस्ट्रियन अर्थात्

एल्ब और डैन्यूब के निवासी मेल खाते हैं। राइन नदी के ही कारण स्विटज़रलैंड तथा हालैंड के देश अलग अलग अपनी स्थित रख रहे हैं। यह नदी रोमन तथा ट्यूयनिक भाषा भाषी लोगों के मध्य सीमा बनाती है।

राइन नदी की घाटी भी बड़ी महत्वपूर्ण है मध्य योरूप के लगभग ३०० फुट समुद्र धरातल से ऊँचे प्रदेश होकर राइन नदी बहती है। निदरलैंड के दक्षिण ब्रूसेल्स से मास्ट्रीच्ट होकर ऊँची भूमि जाती है। उसके पश्चात् नीचा प्रदेश है। कलोने के आगे बोन के समीप एक बड़ी पहाड़ी कंदरा है जिससे नदी प्रवाह करती है। कलोने के सामने ऊँचले प्रदेश का किनारा उत्तर की ओर चला गया है और डसलडार्फ तथा डुइसबर्ग पार करने के पश्चात् पूर्व की ओर घूम जाता है।

अटलांटिक सागर के स्टीमर राइन नदी में निदरलैंड की समतल भूमि में सरलता पूर्वक प्रवेश कर आते हैं और सहरोर्ट तथा कलोने तक चले जाते हैं। बड़ी नावों तथा बोटों के बेड़े भी चला करते हैं। राइन नदी काबलेज़, बिङ्गेन, मेंज़ तथा मैनरहीम के मध्य पहाड़ी

कंदराओं में हो कर प्रवाह करती है। मैनरहीम का प्रसिद्ध बन्दरगाह राइन तथा नेकर नदी के संगम पर बसा है।

राइन नदी की घाटी इतनी गहरी है कि मैनरहीम का बन्दरगाह समुद्र धरातल से केवल ३०० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। बिङ्गेन से बान तक राइन ने अपनी घाटी को काट कर एक कंदरा बना दिया है यहां के पहाड़ी प्रदेश की ऊंचाई समुद्र धरातल से १५०० फुट ऊंची है। बिंजेन में नदी ढाई सौ फुट की ऊंचाई से और बोन में डेढ़ सौ फुट की ऊंचाई से गिरती है। यहां पर नदी एक स्थान पर ७० फुट से अधिक गहरी है। नदी का प्रवाह बहुत तेज़ है तथा वह ऊंचे काले अंगोर से ढके पहाड़ों के मध्य होकर बहती है।

बिंजेन के ऊपर आ जाने पर नदी प्रायः ऊंची भूमि के तट हो कर बहती है और दोनों ओर के प्रदेश दिखाई पड़ने लगते हैं। ब्रीसेच स्थान पर भूमि की ऊंचाई समुद्र धरातल से केवल ६०० फुट ऊंची है। यहीं पर ब्लैक फारेस्ट (काला-बन) तथा ओसजेज़ के बनैले पर्वत हैं जो २ हज़ार फुट तक ऊंचे हैं। इस खाई वाली घाटी का सिरा बास्ले में है जो समुद्र से

५०० मील से अधिक दूरी पर है। यहां नदी ढालू भूमि पर तेज़ी के साथ बहती है जिससे स्टीमर या नावें नहीं चल सकती हैं। बास्ले समुद्र धरातल से ६ हज़ार फुट की ऊंचाई पर स्थित है. वेट्टराऊ घाटी गीसेन से फ्रैंक फर्ट को मार्ग बनाती है। गीसेन लाइन पर और फ्रैंकफर्ट मैन पर स्थित है जिनकी ऊंचाई ६०० फुट है।

राइन, नेकर, मैन, लाह्न, मोसेल, वेट्टराउ नदियों की घाटियां ऊंचे प्रदेश बनाती हैं। यह प्रदेश उपजाऊ नहीं है। इन नदियों की तलहटियां जर्मनी में बड़ी उपजाऊ हैं और सघन बसी हुई हैं। यहीं पर नेकर लोअरमैन तथा वेट्टराउ की नौ आबादियों की रक्षा के लिये प्फाल्ग्राबेन बनाया गया है जहां सेना रहती है। रोमन काल में ही इस स्थान पर राइन प्रदेश की सुरक्षा के लिये खाई बनाई गई थी। इस प्रकार राइन नदी ने योरुप के इतिहास पर प्रभाव डाला है कि इसकी घाटी में बनैले-पहाड़ी प्रदेश के मध्य घनी कृषक बस्ती थी। प्राचीन काल से ही यह नदी उत्तर से दक्षिण के लिये मार्ग बना रही है।

राइन-दर्शन

यदि म्यूज़ और सचेल्ट को राइन की सहायक नदी मान लिया जाय तो स्विजरलैंड को छोड़कर राइन नदी का बेसिन चतुर्भुजाकार बन जाता है जिसकी एक भुजा बेल्जियम और हालैंड के तट की होगी। दूसरी भुजा फ्रांस की होगी जो सचेल्ट, म्यूज़ और मोसेल का निकास स्थानों से बास्ले तक होगी। तीसरी भुजा दूसरी की लगभग समानान्तर जर्मनी में होगी जो लिप्पे, रुह्र और लाह्न के उद्गमों के बाहर से मैन के उद्गम तक होगी। यह भुजा लगभग सब की सब बोहेमिया में होगी। चौथी भुजा उस लाइन की होगी जो मैन नदी के उद्गम से आरम्भ होगी और नेकर के उद्गम के बाहर बाहर बास्ले तक जावेगी। यहां दक्षिणी कोण पर जहाँ दूसरी और चौथी भुजाएं एक दूसरे को काटेंगी। स्विस की राइन नदी उस प्रदेश में प्रवेश करती है जो डैनूब तथा डौब्स नदियों के मध्य स्थित है। डैनूब और रोन नदी के बेसिन राइन के बेसिन को प्रायः बास्ले पर काट देते हैं। यहां चतुर्भुज क्षेत्र के दक्षिण स्विस अलपाइन घाटियों में ५०० छोटी पहाड़ी नदियों के उद्गम हैं।

जर्मन लोग स्विस राइन को अलग कर देते हैं और उनके लिये अपर राइन बास्ले से खुली घाटी होकर प्रवाह करने के पश्चात् मेन्ज और बिन्जेम को आती है। मध्यवर्ती राइन का भाग बिन्जेम से आरम्भ होता है और कलोने की कंद्रा होता हुआ जाता है। कलोने से समुद्र तक वाला भाग लोअर राइन कहलाता है।

महाराजाधिराज अगस्तस ने राइन नदी को फ्राँस की प्राकृतिक सीमा होने की नीति का अनुसरण किया। फ्रांसीसी साम्राज्य की सीमा बनाया और गाल को चार प्रान्तों में विभाजित किया था। पर उसकी मृत्यु के पहले ही बेल्जिका के दो प्रान्त उत्तम और मध्यम जर्मन प्रान्त बन गये थे। यह दोनों प्रान्त राइन नदी के पश्चिम में स्थित थे। एक में स्ट्रासबर्ग तथा मेन्ज और दूसरे में कलोने और ऐचेन नगर थे। कुछ समय के पश्चात फ्रांस की सीमा पूर्व की ओर राइन के आगे बढ़ा दी गई जिससे नेकर और निचला मेन की उपजाऊ घाटियां फ्रांसीसी सीमा में आ गई। आज तक अफाल्ग्रावेन की खाई वर्तमान है जो सिद्ध करती है कि राइन कलोने से नीचे रोमन सीमा थी। निदरलैंड में भी प्राचीन

राइन ही सीमा बनाती थी। आज उसी स्थान पर ऊटरेच तथा लेडेन की खाइयां वर्तमान हैं।

जब रोमन संस्था का विच्छेद हुआ और फ्रैंकिश तथा जर्मन डोमीनियनों का विकास बोहेमिया की सीमा से ब्रिटनी की सीमा तक हुआ तो राइन नदी तथा राइन बेसिन संयुक्त उत्तरी योरुप के विशप के अधिकार में हो गया जिसमें पिरेनीज़ से बाल्टिक तक के प्रान्त सम्मिलित थे। कर्ल डेर ग्रोसे या चार्लामेन ने अपने महल ऐचेन इंगेल्हीम में बनाये। उसकी लड़ाइयां वेसेर, डैन्यूब तथा एब्रो नदी से सम्बन्ध रखती थीं।

चार्लामेन के पश्चात् कोई और दूसरा व्यक्ति न था जो यूलिसीस के धनुष को झुका सकता इसलिये कालिंग वंश का विभाजन शासन के ध्यान से किया गया पर प्रत्येक विभाजन में राइन प्रदेश का स्थान विशेष ही रहा। ८४३ ई० में वर्ड्न की संधि हुई जिसके अनुसार फ्रांसिया तीन भागों में बांट दिया गया। पश्चिमी भाग का नाम कारोलिंजिया रक्खा गया जहां का शासक चार्ल्स राजा था। यह राज्य स्पेनी पिरेनीज़ से बेल्जियम तक फैला था पर इसमें रोन का बेसिन शामिल न था। पूर्व का जर्मन राज्य था

जहां टयूटानिक जाति का शासन था। इनके मध्य में कारोलिञ्जिया और रेगूम टयूटो निकम थे जो लोथरिञ्जिया कहलाया और जिसमें आधुनिक हालैण्ड के राइन मुखड़े से लेकर बेल्जियम, राइन प्रान्त, लोरेन, बर्गंडी आल्प्स, उत्तरी इटली तथा रोम सम्मिलित थे। इस विभाजन के अनुसार फ्रांस तथा जर्मनी एक साम्राज्य के अंतर्गत राज्य थे। इस साम्राज्य की उत्तरी राजधानी ऐचेन और दक्षिणी रोम थी।

८८७ ई० चार्लीमेन के साम्राज्य का अंतिम निर्णात्मक विभाजन हुआ। यह विभाजन चार राज्य में हुआ था जिनका नाम करोलिञ्जिया, जर्मनी, बर्गंडी तथा इटली था। इसके अनुसार मोसल और म्यूज़ नदियों का बेसिन जर्मन राज्य में चले गये। यह भाग आज तक योरुप में लड़ाई का कारण बन रहा है। कारोलिञ्जिया जो बाद में फ्रांस बना वह अपने टयूटानिक निकास को भूल गया और समस्त गाल का उत्तराधिकारी बना इसलिये वह राइन सीमा का भी उत्तराधिकारी हुआ। उधर जर्मनी ८८७ ई० की संधि के अनुसार लोथरञ्जिया का अधिकारी हुआ जिससे वह स्तीन तक राइन बेसिन पर अपना अधिकार सिद्ध

करता रहा है।

रोमन तथा मध्य काल में राइन के सम्बन्ध में यही राजनैतिक झगड़ा उत्पन्न था। रोमन साम्राज्य सैनिक सड़कों द्वारा एक सूत्र में बंधा था। राइन के दक्षिणी तट पर बासल, स्ट्रासबर्ग, मेंज, कोबलेंज और कालोन आदि नगर स्थित थे।

पांचवीं सदी में असभ्य लोगों ने समस्त योरूप पर आक्रमण किया जिससे सैनिक सड़कें नष्ट हो गईं इस कारण मध्य काल में लोगों को घोड़े की सवारी पर देहात होकर युद्ध क्षेत्र में जाना पड़ता था। युद्ध के लिये सामान आदि नदियों द्वारा ही जाता था इसलिये सीमाओं का विभाजन नदियों के बेसियों के अनुसार किया गया था।

पूर्व जर्मनी एल्ब तक फैला था। उस समय वियना या बर्लिन नगर के स्थान उसमें न थे। उत्तर की ओर जर्मनी वेस्टफीलिया तक (राइन तक नहीं) फैला था दूसरी ओर एल्ब के आगे होल्स्टीन तक सैक्सन जाति के लोग थे। इस राज्य के मध्य में वेसेर नदी थी। मेन, राइन, म्यूज और मोसेल आदि नदियों पर फ्रैंक लोग थे जो मध्यवर्ती जर्मन कहलाते थे। दक्षिण की

ओर अपर राइन, डैन्यूब स्वाबियन थे। इनसे पूर्व डैन्यूब के किनारे हङ्गरी की ओर बवेरियन लोग थे। राइन के मुहाने से उत्तरी सागर तक के दलदली तट पर फिसियन लोग बसे थे।

अलेमानी प्रदेश दसवीं सदी में स्वाबिया का डची बन गया था उसी समय जर्मन राज में बवेरिया और सैक्सनी राज्य बने। उसी समय जर्मनी में एक फैंक डची भी थी। मेन और राइन फैंकिश डच की मुख्य नदियां थीं।

इस प्रकार जर्मनी में सैक्सनी, फ्रांसिया, बवेरिया अलेमानिया और लोथरिंजिया राज्य बन गये। जैसे टेम्स नदी पर लन्दन समस्त इंगलैंड तथा पेरिस (सीन नदी पर) अपने चारों ओर की राजधानी बन गया इसी प्रकार यदि राइन नदी पर कोई नगर स्थाई रूप से राजधानी बन गया होता तो योरूप का इतिहास कुछ और होता। पर जर्मन राज छोटे छोटे राज्यों में बंटा था और राजधानी का काम कई नगरों में विभाजित था जिनमें से बहुत से राइन नदी पर स्थित थे। महाराजाओं का चुनाव फैंकफर्ट में होता था सिंहासन संस्कार ऐचेन में होता था और मरने पर स्पेयर में

मृतक क्रिया होती थी। दसवीं तथा ग्यारहवीं सदी में सैक्सन वंश के राजे थे। ग्यारहवीं और बारहवीं सदी में फ्रैंकोनियन वंश के राजे थे। बारहवीं तथा तेरहवीं में स्वानियन वंश के राज थे। उसके पश्चात् बहुत से छोटे छोटे राज्य हो गये जिनमें आपस में झगड़ा बहुत बढ़ गया। बर्लिन और वियना दोनों एक दूसरे के विरोधी जर्मन राजधानियां बन गईं और आपस का झगड़ा इतना बढ़ गया कि जर्मनी को राइन प्रदेश के बारे में सोचने का अवसर ही न रहा फल यह हुआ कि राइन प्रदेश पेरिस से आक्रमण के लिये खुल गया।

राइन प्रान्त के झगड़े के लिये भौगोलिक तथा राजनैतिक दोनों कारण उपस्थित थे। राइन नदी का मानचित्र में अध्ययन करने से ही भौगोलिक कारण सिद्ध हो जाते हैं। राजनैतिक कारणों का वर्णन उपर आही चुका है। इनके अतिरिक्त और भी प्राकृतिक कारण उपस्थित थे जिसके कारण उत्तर और दक्षिण में विभाजन हुआ। फ्रैंक लोग जो जर्मनी के मध्यवर्ती लोग थे वह मेन की घाटी तथा मध्यवर्ती राइन में स्थानिक बने रहे। लोथरिंजिया में वह लैटिन लोगों से मिल गये। इस प्रकार फ्रैंक लोग शक्ति हीन हो गये

और उत्तर में सैक्सन तथा दक्षिण में स्वाबियन और बवेरियन लोग शक्तिशाली बने रहे जिनके मध्य झगड़ा प्रबल रूप धारण करता गया। इसके साथ ही साथ लोगों में राष्ट्रीयता की कमी थी। जब ईसाई रोमन साम्राज्य पर पैगन जर्मन लोगों का आक्रमण हुआ था तो राइन नदी क्रिश्चियन की सीमा थी यद्यपि ईसाई धर्म का अंत हो चुका था। इस कारण धर्म प्रचारक केन्द्र राइन नदी के ठीक पश्चिम स्थित थे। इनमें से कोल्न, ट्रीर तथा मेंज समुद्री मेट्रोपोलिटन बन गये और फिर आर्च बिशपरिक बन गये। इस स्थानों का फ्रांसीसी नाम कोलेन, ट्रेव्स तथा मेयन्स है। कोलोन से धर्म प्रचारक राइन से उतर कर फ्रशलैंडर्स के मध्य कार्य करने के लिये आये और उत्तरी मैदान के सैक्सन लोगों के मध्य रहने के लिये आये थे। धीरे धीरे चर्च संगठन समस्त जर्मनी के हेतु लोथरंजिया और राइन पर स्थित ड्यूटानिक फ्रांसिया में केंद्रित हो गया।

सदियों व्यतीत होने के पश्चात् राइन बेसिन के आर्च बिशपारिकों तथा बिशपरिकों अपना शासन राइन प्रदेश पर स्थापित कर लिया। उन प्रदेशों में यूटरेच, लीज, मुन्स्टर, पेडरबोर्न, कोलन, ट्रीर, मेंज, उर्जबर्ग,

वर्म्स, स्पेअर, स्ट्रासबर्ग, बास्ले, मेटज् टाउल और वर्डून सभी राइन या उसकी सहायक नदियों पर स्थित थे।

जर्मनी के व्यापारिक नगरों के आधार पर ही स्विजरलैंड तथा नेदरलैंड में संघ शासन की स्थापना हुई है। उत्तर की ओर बाल्टिक तथा उत्तरी सागर पर हसियाटिक लीग जो रूस, स्कैंडीनैविया और इंगलैंड के साथ व्यापार करता था उसका चिन्ह आज तक मान चित्र में तीन स्वतंत्र नगरों लूबक, हैम्बर्ग और ब्रेटेन के रूप में शेष है। कुछ काल तक राइन के नगर (बास्ले से कलाने तक) भी मेज़ नगर के आधीन संघ बनाने का प्रयत्न करते रहे पर अब उसके चिन्ह शेष नहीं रह गये हैं।

रिफारमेशन (सुधार) आन्दोलन के आरम्भ होने पर जो धार्मिक झगड़े आरम्भ हुये उनका प्रभाव राजनैतिक रूप से राइन प्रान्त पर पड़ा जिसके फल-स्वरूप प्रत्येक धार्मिक तथा राजनैतिक राज्य अपने पड़ोसी से लड़ने लगा था और उसने प्रजा के हित को किञ्चित मात्र भी ध्यान नहीं दिया। इसी बीच फ्रांस एक बड़ा केन्द्रित शासन राज्य बन गया था और जब

जर्मनी में तीस साला धार्मिक युद्ध आरम्भ हुआ तो वह अपना कार्य पूर्ण रूप से करने के लिये तयार था। फ्रांस की कूटनीति यह थी कि वह जर्मनी को विभाजित (खासकर राइन प्रदेश में) विभाजित रक्खे इसी कारण फ्रांस के कूटनीतिज्ञ रेशलगू तथा मैजरिन जर्मनी के प्रोटेस्टेंट राज्यों का युद्ध में साथ दिया। धीरे धीरे थोड़ा थोड़ा करके फ्रांस ने जर्मनी का समस्त राइन प्रदेश फ्रांस में सम्मिलित कर लिया। सोलहवीं सदी में फ्रांस का यह कार्य टाउल वर्डूक तथा मेज़ नगरों को सेकुलर राज्य बनाने से आरम्भ हुआ था। सत्रहवीं सदी में लूई चौदहवें के समय में अलसेस प्रांत फ्रांस में मिला गया। और मध्य राइन प्रदेश खासकर हाईडेलबर्ग के पैलेटिनेट का ध्वंस हुआ। अठारहवीं सदी में लोरेन की डची को भी फ्रांस ने अपने में मिला लिया। प्रथम क्रांति के युद्ध के कारण मेञ्ज नगर फ्रांस के अधिकार में आ गया था और लूनेविल्ली की संधि के समय तक एक कोण से दूसरे कोण तक राइन प्रदेश फ्रांसीसी सीमा बन गया। एकलजिस्टिकल (चांदी वाले) राज्य समाप्त हो गये। पूर्वक्षत समस्त सीमायें रद्द कर दी गईं और उसके स्थान पर विभागीय बंटवारा

किया गया। जर्मन तथा फ्रांसीसी भाषा भाषी प्रान्तों में नैपोलियन द्वारा निर्धारित कानून लागू हो गया। इस प्रकार सदियों से जो झगड़ा चला आ रहा था उसका अंत होगया।

जब नैपोलियन का पतन हुआ तो भी योरुपीय राज फ्रांस से भयभीत थे। जर्मन राज्य आपसी झगड़े के कारण फ्रांस के विरुद्ध संयुक्त रूप से खड़े होने में असमर्थ थे पर फ्रांसीसी राइन सीमा पर उन्होंने कुछ बड़ो भूमों का संगठन कर लिया जिससे उन्हें तो हानि हुई पर नैपोलियन तथा फ्रांस के लिये लाभदायक कार्य हो गया। उसी के फल स्वरूप आधुनिक मध्य योरुप की स्थापना हो गई। दक्षिण की ओर बवेरिया उर्टम्बर्ग और बेडेन के तीन जर्मन राज्य स्थापित हो गये। बेडेन राइन प्रदेश सीमावर्ती राज्य मान लिया गया। लोथरजिया एक बार फिर दो भागों में विभाजित हो गया। स्विबियन अल्पस और लारेन प्रान्त फ्रांस के हो गये और बेल्जियम तथा प्रशन राइन प्रदेश उससे अलग हो गये।

उसके पश्चात् जब नैपोलियन त्रितीय फ्रांस का हुआ तो बिस्मार्क ने प्रशा का शक्तिशाली राज्य स्था-

पित कर लिया था। उसके राज्य की सीमा ट्रीर (फ्रांसीसी) सीमा से निग्सबर्ग (रूसी सीमा) तक फैल गई थी। राइन सीमा पर पुनः जर्मन सैनिकों का जमघट होने लगा। १८६६ ई० से १८७० ई० तक योरुपीय राजनीति में खलबली मची रही क्योंकि नेपोलियन अपनी सीमा को इस प्रकार बनाना चाहता था जिससे प्रशा तथा इटली की शक्तियाँ अधिक शक्तिशाली न हो जायं जिससे भय उत्पन्न हो सके। बिस्मार्क राइन सीमा से फ्रांस को अलग रखना चाहता था और फ्रांस राइन प्रान्त को अपनाना चाहता था। इसी कारण प्रुशा तथा दक्षिण जर्मन राज्यों के मध्य युद्ध खड़ा हो गया। दक्षिणी फ्रांस के साथ १८७० में मिल गये आखिरकार फ्रांस को मुँहकी खानी पड़ी और उसका राइन प्रदेश पर कुछ भी अधिकार न रह गया।

प्राकृतिक तथा ऐतिहासिक दृष्टिकोण से राइन बेसिन ग्यारह प्रदेशों में विभाजित था। अल्पस में दो भाग थे क्योंकि स्विज़रलैण्ड के पर्वत तो समानान्तर श्रेणियां बनाते हैं जो एक घाटी द्वारा विभाजित हैं। १—दक्षिण-पूर्व स्विज़रलैण्ड में, ग्रीसन्स में रेटिक श्रेणियों में होकर जाती है। २ स्विज़रलैण्ड के पूर्वी

कोण पर होती हुई कोन्सटेंस झील होकर बहती है। इस झील का किसी समय स्वाबियन सागर नाम था। इस भाग में इसी कारण इसको स्वाबियन राइन कहते हैं। स्विज़रलैण्ड छोड़ने के पूर्व ही राइन नदी में और सहायक बड़ी नदी आकर मिल गई है। ३—हाल्वेटिक के गद्गम या अल्पस पर्वत के सामने वाली श्रेणियाँ। ४—राइन की ऊपरी घाटी जो मेञ्ज तथा बिंजेन में है। ५—मैनहीम का भाग जिसमें इसकी सहायक नदियों के बेसिन हैं। ६—बाईं ओर नेकार और मेन नदियों के बेसिन। ७—अपर मोसले और अपर मेञ्ज के बेसिन। ८—मध्यवर्ती राइन नदी का वह भाग स्चिस्ट उँचले प्रदेश से बोन को जाता है। ९—डच सीमा का राइन प्रदेश। १०—निचले प्रदेश का आगे वाला भाग जहाँ राइन नदी स्केल्ट से मिलती है और राइन म्यूज़ तथा स्केल्ट समीपवर्ती प्रदेशों का पानी लेती हैं। ११—हालैण्ड का आधुनिक राज्य इस प्रकार राइन नदी की छान बीन करने के पश्चात् वह चार मुख्य भागों में विभाजित हो सकता है।

१—स्विस बेसिन जिसमें रेटिक राइन, स्वाबियान राइन तथा भार नदियाँ हैं। २—अपर जर्मन बेसिन

मेन नेकार और मैनहीम के नीचे और राइन नदियां हैं। ३—मध्यवर्ती जर्मन बेसिन जिसमें मोसेल, अपर म्यूज और मध्यवर्ती राइन नदियां हैं। ४—निदर लैराल्स का बेसिन जिसमें निचली जर्मन राइन, लोअर म्यूज़, स्केल्ट और डेल्टा प्रदेश सम्मिलित हैं।

रहेटिक राइन प्रदेश

राइन नदी के सुन्दर उद्गम आल्पस पर्वतों के केन्द्रीय भाग रहेशिया में स्थित है जो भूमध्य सागर तथा डैन्यूब के मध्य स्थित है। रहेशिया स्विज़रलैण्ड और टीरोल दो भागों में विभाजित है। स्विज़रलैण्ड के लगभग २०० ग्लेशियरों वाली नदियों द्वारा बन कर एक बड़ी चौड़ी हरी नदी का रूप बनता है जिसे आदि काल से ही राइन नाम से पुकारा जाता है। ग्रीसन्स की दूसरी नदियाँ इंगेडाइन की राइन नदी है जो डैन्यूब की सहायक नदी है। यहाँ कुछ घाटियाँ हैं और मुंस्टेर, थाल, वाल पास्चिआओ, बाल ब्रेगागलिया और बाल मसेलो का पानी इटली तथा एड्रियाटिक सागरों में जाता है। कैंटन के उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर दो समानान्तर प्राकृतिक रूप वस्तुएँ एक घाटी तथा एक पहाड़ी स्थित हैं। पहाड़ी रागाज़ से ओबेराल्प घाट तक

फैली है जिसमें हिम वाली चोटियाँ हैं। इनमें सब से ऊँची टोडी चोटी है जिसकी ऊँचाई ९ हज़ार से १२ हज़ार फुट तक है। इस पर्वतीय भाग में कोई घाट ७ हज़ार फुट से अधिक ऊँचा नहीं है। कुछ दूर तक इस पहाड़ी का भाग ग्राब्युडेन की सीमा बनाता है। उत्तर की ओर घाटियां इससे नीचे आल्पस ढालों से होकर लूसर्न तथा ज़्यूरिच झीलों को जाती हैं। दक्षिण की ओर सीधे ढाल हैं जिनमें छोटी पर्वतीय नदियां हैं जो बुंडनेर ओबेरलैण्ड की घाटी में गिरती हैं। इसी घाटी में होकर ओरडेर राइन नदी बहती है। इस घाटी में डिसेन्टिस स्थान ओबेराल्प घाट से केवल १० मील की दूरी पर स्थित है। चूर और अधिक ३० मील दक्षिण की ओर स्थित है और समुद्र धरातल से २००० हज़ार से भी कम ऊंचाई पर स्थित है। इस प्रकार ग्रीसन्स की उत्तरी-पश्चिमी सीमा लगभग एक मील ऊंची पहाड़ी दीवार की बनी है। इसे केवल दिन भर की कठिन पैदल यात्रा करके ही पार किया जा सकता है।

और अधिक पूर्व की ओर इसी प्रकार की रहेटिकोन सीमा है जो उत्तर-पूर्व की ओर जाती है। ग्राबुं-

डेन में पाटीगाऊ घाटी है। रहेटिकोन की चोटियां ६ हज़ार फुट ऊँची हैं और उसके घाट ६ हज़ार फुट ऊँचे हैं। पाटीगाऊ का क्लोस्टर्स गांव समुद्र से ४ हज़ार फुट से भी कम ऊँचाई पर स्थित है। आस्ट्रिया की ओर स्विज़रलैण्ड तथा ग्राबुंडेन के मध्य रहेटिकोन सीमा बनाता है।

इस प्रकार टोडो तथा रहेटिकोन श्रेणियां दक्षिण-पूर्व तथा दक्षिण-पश्चिम से आकर रागाज़ में मिलती हैं। रागाज़ चूर के उत्तर में स्थित है। उसके पीछे बुंडनेर ओबेरलैंड तथा पाटीगाऊ स्थित हैं और राइन का पानी उत्तर को ओर भेजती है। रागाज़ स्थान पर राइन की ऊँचाई केवल १७०० फुट है जब कि उसके दोनों ओर ६ हजार फुट ऊंची चोटियां स्थित हैं। दक्षिण की ओर खुले स्थान चूर तक अंगूर के हरे-भरे स्थान स्थित हैं। इन चोटियों से जो पहाड़ी नदियां निकलती हैं। यहां ओबेराल्प, सिप्टमेर, जूलरि, अलबुला, स्कालेटा, फ्लूएला, ग्रीना, बर्नारडीनो, स्प्लूगेन, डवाना आदि घाट हैं जो ६ हजार फुट की ऊँचाई से कम पर स्थित नहीं हैं।

इस सीमा में राइन नदी का ग्राबुंडेन बेसिन सदैव

राइन-दर्शन

बरफ से ढके रहने वाले स्थान से कुछ ही नीचे स्थित है। डैन्ग्रोस घाटी और रीनवल्ड घाटियाँ ओवेरलैएड के समानान्तर स्थित हैं। जिसमें ५ हजार फुट की ऊंचाई पर चरागाहें स्थित हैं। इनके उत्तर में पहाड़ी नदियां हैं जो नीचे आकर थूसिस स्थान पर मिल जाती हैं। उसके पश्चात् एक खुली घाटी से बहती हैं और फिर नीचे समतल धरातल पर होती हुई धनी खेतिहर प्रदेश होकर प्रवाह करती हैं। सचमुच ही ग्राबुंडे दो चौकों पर बसा है।

चूर से जो मार्ग ऊंची घाटियों को पर्वतीय कंद-राओं होकर बनाए गये हैं, उनके बनाने में बड़ी इंजी-निरिंग कुशलता का प्रयोग करना पड़ा है। वे पर्वतीय घाटों तथा हिमागारों से होते हुये दूसरे नदियों के बसिनों में उतर कर आते हैं। यहाँ मार्गों का पता लगाना बड़ा ही कठिन है। जो मार्ग दक्षिण की ओर लूकमानी से सेप्टिमेर को जाते हैं। वह शीघ्रतापूर्वक नीचे इटली की घाटियों में उतरते हैं। दूसरी ओर दक्षिण-पूर्व जूलीर से फ्लूएला से सड़कें राइन और डैन्यूब के मध्य जल विभाजक प्रदेश से जाती हैं वह एंगेडाइन में गिरती हैं यह एक ऊंची चरागाह वाली

घाटी है। एंगेडाइन के आगे बर्नीना घाट इटली के मैदानों को जाता है। उत्तर-पूर्व की ओर जहां एंगेडाइन ग्रीसेंस प्रदेश को छोड़ कर टीरोल की सीमा में प्रवेश करती है, यह फिंस्टरमुञ्ज कंदरा होकर उतरती है और ऐसे स्थान पर आती हैं जिसकी तुलना थूमिस के नीचे राइन प्रदेश से की जा सकती है।

इसी में ग्राबुंडेन की राजनैतिक एकता निहित है। यह ऊंची चरागाहों का प्रदेश है जहां गल्लेवान लोग रहते हैं। यह लोग स्विजरलैंड के चरागाहों में घाटियों द्वारा अलग हो गये हैं। ऊपरी प्रदेश की वाल पास्चि-आओ, वालब्रेगागलिया तथा वाल मसेको इटली की घाटियां अब भी राजनैतिक रूप से ग्रीसन्स से सम्बं-धित हैं।

एक हिसाब से प्रत्येक दक्षिणी चोटी का प्रदेश का अधिकार राइन हेड कहलाने का है। टिसिनो घाटी के गहरे कटान पर ग्रीसन की पश्चिमी सीमा पर अछूता स्थित है आल्प्स की ऊंची चोटियों में केवल यही एक चोटी है जिसका अब तक प्राचीन नाम चला आता है इस चोटी को स्ट्राबो का मोन्स आडूलस कहते हैं। इसका सर्वोच्च स्थान राइन वाल्ड हार्न है जो ११

हज़ार फुट से भी अधिक ऊंचा है और इसके नीचे, पूर्वी ढाल पर जप्पोर्ट हिमागागार के अंत में एक हिम वाली कंदरा में राइन नदी का निकास है। निकास वाला सोता हिम-कीचड़ से मोटा रहता है। यह एक पहाड़ी कंदरा में होकर गिरता है जिसे किसान लोग नरक कह कर पुकारते हैं। इसके किनारे हिम तथा पत्थरों के उजाड़ मैदान के मध्य कुछ हरा-भरा स्थान है जिसे स्वर्ग कहा करते हैं। नरक और स्वर्ग से नदी उत्तर-पूर्व को चलती है और बीस मील तक खुली राइन वाल्ड घाटी बहती है और लारोफना की गुफा को जाती है जिसमें उत्तर की ओर मुड़ कर यह शीघ्रतापूर्वक नीचे गिरती है। आईला से रोफना के मध्य वाली दूरी के लगभग दो तिहाई दूरी पर दो छोटे गांव स्थित हैं इन्हें हिंटरहीन और स्प्लुजेन कहते हैं। यह समुद्र-तल से एक मील ऊंचे हैं। हिंटरहीन से एक टेढ़ी-मेढ़ी सड़क बरनाहिनो घाट को जाती है जो ६ हज़ार सात सौ फुट की ऊंचाई पर स्थित है उसके पश्चात् सड़क स्विस टिसिनो को उतर आती है। स्प्लुजेन से ७ हज़ार फुट की ऊंचाई पर स्प्लुजेन दर्रे को दूसरी सड़क जाती है उसके पश्चात् दक्षिण की ओर इटैलियन घाटी को आती है।

रीनवाल्ड गांवों में जहां यह दोनों सड़कें जाती है २० मील तक इटैलियन भाषा बोली जाती है। घाटियों में अंगूर तथा दूसरे फलों के बन तथा बाग़ हैं। और सूर्य की कड़ी धूप होती है। बर्नार्डिनो सड़क को स्विस सरकार ने बनाया था। उसी समय स्प्लुजेन सड़क को आस्ट्रियन सरकार ने बनाया था जब कि उसका शासन इटली में स्थापित था। रीनवाल्ड के निवासी जर्मन भाषी हैं। यह लोग उन लोगों की संतान हैं जिन्हें बारहवीं सदी में फ्रेडरिक बारबरोसा ने लाकर बसाया था। ये लोग वेल्सरबर्ग घाट से आये थे। जो उत्तर की ओर से हिंटरहीन गांव को आता है जिसका संकेत वेल्सर राइन से मिलता है जो बुन्दनेर ओबरलैण्ड में ओरडर राइन की सहायक नदी है रोनावाल्ड में राइन का नाम हिंटर राइन है।

रोफना की पहाड़ी कंदरा पर नदी खुली घाटी को छोड़ती है और पाइन बन में प्रवेश कर जाती है तीन चार मील तक ऊंचे-नीचे स्थानों पर बहती हुई स्चाम्स की खुली घाटी में निकलती है जहां के निवासी प्रोटेस्टेंट पर उनकी भाषा रोमनाम्च है। ग्रीसोन्स के अधिकांश निवासी रोमोन्स्च भाषा बोलते हैं। यह

भाषा दीहाती इटैलियन भाषा में मिलती जुलती है।

स्मास्च के सिरे पर जहां शफाना से राइन निकलती है वहीं समीपवर्ती कंदरा में अवेरसर राइन प्रवेश करती है। इस नदी में २० घाटियों का पानी आता है जिनके सिरे २० मील दक्षिण की ओर स्थित हैं। अवेर्स की घाटी समस्त आल्प्स में सुन्दर घाटियों में से है। इसके तट पर फेरेरा में रोमांस्च भाषा के बोलने वाले रहते हैं पर इनके सिरे क्रेस्टा और जूफ गांव स्थित हैं जहां के निवासी जर्मन हैं। यह लोग वेकेरा से आये हुये जर्मन निवासियों की संतान हैं जो तेरहवीं सदी में आकर बसे थे। आल्प्स प्रदेश में जूफ सबसे ऊंचा गांव है। इस प्रकार रीनाल्ड तथा अवेंस जर्मन भाषी घाटियां है और उनसे बने हुये कोण में इतैलियन भाषी नदियों की घाटियां हैं। इन घाटियों में होकर दक्षिण की ओर स्प्लूजेन तथा बर्नार्डिनो सड़कें जाती हैं।

स्वाम्स की पांच मील लम्बी घाटी विया माला की कंदरा में समाप्त हो जाती है जहाँ राइन नदी संकरे पहाड़ी मार्ग होकर बहती है एक स्थान पर इस मार्ग की चौड़ाई केवल १० गज़ है। और नदी के दोनों ओर

१६०० फुट ऊंचा पहाड़ा चट्टानी दीवारें हैं। पहले इसी कंदरा के समीप से आल्प्स के घास के मैदानों को मार्ग जाता था। पर जब १८२० ई० में बरनार्डिनो पर स्विस सड़क बनी तो एक और अधिक समतल मार्ग काट कर तयार किया गया।

थूसिस स्थान पर राइन की नोल्ला नामक सहायक छोटी नदी बाईं ओर से आती है। यह नदी स्लेट के पर्वतीय मार्ग होकर बहती है। स्लेट वाली भूमि इतनी नरम है कि वर्षा में नदी का पानी स्याही की भांति काला हो जाता है। नोल्ला घाटी पर्वत के भीतर प्रवेश करती जाती है और किसी न किसी समय में यह घाटी पहाड़ को काट कर मार्ग बनाती हुई साफीर घाटी से जा मिलेगी।

थूरिस से नीचे दाहिनी ओर से अल्बूला नदी राइन में आकर प्रवेश करती है। इस नदी में राइन की भांति ही बहुत पानी रहता है। अलबूला स्चोन घाट होकर थूसिस स्थान पर आती है। यह पहाड़ी कंदरा विया माला की भांति ही विशाल है। स्चीन के ऊपर बहुत सी सहायक नदियों की घाटियां है। डैभोस घाटी रीनवाल्ड से मिलती जुलती है। यहां हीम की पहाड़ी

नदी है जो दक्षिण-पूर्व से क्लोस्टर्स को जाती है। यह नदी किस समय स्विस लोगों के कथनानुसार डैवोस के लैण्ड क्वार्ट की एक बड़ी नदी थी। क्लोस्टर्स से डैवास को एक सड़क जाती है। चूर और माटीगाऊ से एक रेलवे लाइन डैवोस को जाती है।

एंगेडाइन रेलवे लाइन ग्रीसन्स को पार करती हुई जाती है। यह चूर से आरम्भ होती है और नीचे नाऊ तथा थूसिस के समीप होकर जाती है। आगे चल कर यह स्चीन गार्ज (कन्दरा) टीफेनकास्टेन को जाती है और फिर अलबूला घाटी के ऊपर होकर गुजरती है और फिर इस नदी के उद्गम के समीप सेंट मोरिज पर लगभग चार मील लम्बी सुरंग होकर निकलती हैं। रोचेनाऊ से एक शाखा लाइन इलाञ्ज को जाती है। यह बीच लाइन बुंदेर ओवेरलैण्ड में है। यह शाखा उच्च घाटियों पर स्वास्थ सुधार के लिये जाने वाले यात्रियों के लिये बनाई गई है। साधारण रूप से चौड़ी योरुपीय रेलवे लाइने ग्रीसन्स प्रदेश में उत्तर से चूर स्थान तक आती हैं।

अल्बूला की ऊपरी घाटी की समानान्तर ओवेर हाल्स्टीन राइन की घाटी है। टीफेनकास्टेन स्थान पर

दोनों नदियों का संगम हो जाता है उसके पश्चात् स्चीन कंदरा होकर अल्बूला नदी पश्चिम की ओर घूमती है। प्राचीन काल में तथा रोमन समय में जर्मनी और इटली से रहेशिया होकर ओबेरहाल्स्टीन को यात्रियों का प्रधान मार्ग जाता था और वहां से अन्य घाटियों को विभिन्न मार्गों से यात्री यात्रा करते थे। पर अब ओबेरहाल्स्टीन प्रधान यात्रियों वाले मार्ग से दूर पड़ जाता है। इस प्रधान मार्ग के सिरे पर सेप्टिमेर घाट है जो ब्रेगागलिया की घाटी को जाता है उसके पश्चात् पश्चिम की ओर घूम कर इटैलियन स्थल होकर चियावेन्ना स्थान पर स्प्लूजेन सड़क से मिल जाता है। ब्रेगागलिया घाटी की भाषा इटैलियन है यद्यपि वहां के निवासी प्रोटेस्टेंट हैं। ओबेरहाल्स्टीन के निवासी इटैलियन तथा रोमन्स्च भाषाओं का प्रयोग करते हैं। स्टेमरे घाट हिमाच्छादित ढालों के कारण हिमागारों से बड़ा खतरा रहता है। इसी कारण आधुनिक सड़क तथा प्राचीन ऊंटों वाला मार्ग घाटी के सिरे के समीप से जूलियर घाट को घूम जाते हैं। यह घाट ७,५०० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। जूलियर घाट होकर ये मार्ग सिल्वाप्लाना स्थान पर एंगेडाइन घाटी में

प्रवेश कर जाते हैं। भिल्वाञ्जाना से सड़क यहटी के पश्चिम को ओर लौटती है और मलोजा घाट पर आती है और फिर गोलाकार रूप धारण करती हुई वाल ब्रेगागलिया में प्रवेश करती है।

ओबेर हाल्बस्टीन घाटी में दोनों ओर पानी के बहाव के कारण ढाल बन गये हैं। यह ढाल सीढ़ीदार हैं। इन सीढ़ियों पर एकत्रित पत्थरों तथा रोड़ों के अध्ययन से साफ पता चलता है कि वे कहां से बहकर आए हैं। इन्हीं रोड़ों के अध्ययन के आधार पर स्विस हीम का कहना है कि ओबरहाल्बस्टीन राइन अपने वर्तमान स्थान से कहीं ऊँचे स्थान पर प्रवाह करती थी। उस समय नदी के आधुनिक बहाव वाले स्थान पर एक समतल चौड़ी घाटी थी।

टीफेनकास्टेन से उत्तर की ओर २ हजार फुट की ऊँचाई पर पर्वत में एक चौड़ा मार्ग सा बन गया है जिस चूर को १५ मील लम्बा मार्ग जाता है। कान्स्टेंस झील से दक्षिण की बड़ी सड़क और चूर से सेप्टिमेर तथा जूलियर घाटों को जाने वाली सड़कें स्वीनगार्जे होकर नहीं जाती हैं वरन् लेन्ज होकर गुजरती है। हीम ने दिखला दिया है कि लेंज घाट ओबरहाल्स्टीन

पहाड़ी नदी की प्राचीन घाटी है और इसीसे चूर के उत्तर राइन घाटी ने सेप्टिमेर लॅज चूर मार्ग को और अधिक लम्बा बना दिया है।

मीसन्स की घाटियां थूसिस स्थान पर आरम्भ होती हैं जहाँ पर हिंटर राइन वियामाला से निकलती है और उसमें स्चोन गाजे से आकर अल्बूला नदी मिल जाती है। इन दोनों नदियों से बने हुये कोण पर चोटी के ऊपर होहेनरा टीन गढ़ के भग्नावशेष हैं जिससे शायद समस्त प्रदेश के नाम का उद्गम हुआ है। इसी प्रकार टीरोल प्रदेश का नाम टीरोलगढ़ पर ही हुआ है जो मीरान के ऊपर अडीजे घाटी में स्थित था। होहेन राटीनगढ़ से अधिकांश कहानियों का सम्बन्ध है। कहा जाता है कि इस गढ़ को रेहटस ने बनवाया था जो एटरूस्कन्स का नेता था जब कि वे इटली से गाल लोगों द्वारा भगाए गये थे। गढ़ के भग्नावशेष के समीप ही एक चर्च के भग्नावशेष हैं। यह गिरजाघर राइन नदी के रेहटिक बेसिन में सब से प्राचीन तथा केन्द्रीय चर्च था।

थूसिस के नीचे हिन्टर राइन कुछ दूर तक डोपले स्चग घाटी होकर बहती है। रीकोनाऊ स्थान पर आकर

यह ओदर राइन में समकोण बनाती हुई प्रवेश करती है उसके बाद दोनों नदियाँ मिलकर अर्वेराल्प से चूर तक घाटी में पूर्व की ओर प्रवाह करती हैं। इन दोनों नदियों के सङ्गम के उत्तर में कुनकेल्स घाट है जो साढ़े चार हज़ार फुट की ऊँचाई पर स्थित है। टामीना घाटी के आगे रागगज में यह नदी राइन से मिल जाती है और ६ हज़ार फुट ऊँचे कलडा पर्वत की टाडी श्रेणी से अलग करती है। इससे अनुमान लगाया गया है कि जब हिन्टर राइन और ऊंचे भाग होकर बहती थी तो रहीनवाल्ड नदी कुनकेल्स घाट तथा टामोना कटान होकर बहती थी। उस समय रागरस स्थान पर ग्रोसन्स घाटियाँ मिलती थीं जो अब थूसिस स्थान पर मिलती हैं। पफाफेर्स की कंदरा जिससे उष्ण सोते निकलते हैं वह अब एक चौड़ा घाटी की तली बनी है। इस प्रकार अबेरसेर राइन नदी थूसिस तथा कुंकेल्स घाटियों में बहती हुई पश्चिम की ओर से हिन्टर और ओडर राइनों को अपनी सहायक नदी बनाती थी। उसी समय ओबर हाल्स्टीन राइन समानान्तर घाटी होकर उत्तर की ओर टीफेन कास्टेन, लेन्ज और चूर

होकर बहती थी और उसमें पूर्व की ओर से डैओस की लैण्ड वासेर नदी आकर मिलती थी। यह उस समय रहेटकोन से निकलती थी जहां अब लुंटक्वार्ट का उद्गम है।

ओडर नदी एक लम्बी सीधी नदी है। यह रीचे-नाऊ स्थान पर हिंटर राइन से मिलती है। इसकी घाटी दक्षिण की ओर एक पहाड़ी दीवार से घिरी है। जो उत्तर की ओर ऊरी के कैंटन धीरे धीरे ग्लारस और गैलेन में उतरती है। इस श्रेणी की टोटी सर्वोच्च चोटी है जो रीनवाल्डोर्न तथा अदूला से ५०० फुट अधिक ऊंची है। ओडर राइन के बेसिन में छोटे ढाल हैं। इसके मध्य में डिस्सेंटिस की ऊबे है। समीप ही नदी की प्रधान धाराएं हैं जो टिसीनों तथा लागो माागियोरे की घाटियों होकर बहती है। इन घाटियों के निवासी इटैलियन भाषा का प्रयोग करते हैं। डिसेंटिस से मध्यवर्ती राइन नदी तक एक सड़क बनाई गई है यह सड़क घाट के ऊपर होकर जाती है और ओरडर राइन का सम्बन्ध टिसीनो से स्थापित करती है। बर्नार्डिनो घाट हिंटर राइन को मिलाता है। इसके आगे अपर

और नीचे (इलाक्ज के) दक्षिणी सहायक नदियां और अधिक लम्बी हैं और इटैलियन ढालों के किनारों से नीचे उतरती हैं।

स्चानफिग तथा लेञ्ज की घाटियों के संगम पर चूर नगर स्थित है। यहां सभी नदियाँ मिलकर राइन में बहती हैं। यहाँ एक नगर बसा है जिसकी जन संख्या दस हज़ार है। रोमन समय में कूरिया में कचेहरियां थीं। अब यह नगर है और सबसे ऊपर राइन प्रदेश का शासन सम्बन्धी केन्द्र है। जब रोमन शासन भंग हुआ तो चूर के पादरी ने वहां शान्ति को स्थापित किया था फिर भी चूर के विशप का केन्द्र एंगेडाइन में ही रहा।

मध्यवर्ती काल के अंत में किसान लोग अपने ऊपर अत्याचार करने वालों के विरुद्ध उठ खड़े हुये। उनको धार्मिक संस्थाओं से सहायता मिली जिससे संघ-प्रजातंत्र की स्थापना हो गई इस प्रकार प्रत्येक गिरजाघर स्थानीय कार्यों में स्वतन्त्र हो गया कुल मिलाकर इस तरह लगभग ६० स्वतंत्र राज्य बन गये जो अपने प्रतिनिधि गेरचिटे की लीग में भेजते थे। इस प्रकार की तीन

लीगें ग्राबुंद, जेहंगिरिच्टे और काडे में थीं। ग्राबुंद की स्थापना ट्रूंस में हुआ था बाद में इसका केन्द्र इलाञ्ज में हुआ। इसमें बुंदर ओबर लैण्ड, वाल्सेर और सफीर, रीनवाल्ड तथा अर्वेर्स घाटियाँ थीं। जेहेनग्रोचेनबुंद दस जिलों की लीग था और उसके अधिकार में प्राटीगाऊ, स्चानफिग तथा डैग्रोस थे। इसकी राजधानी डैवोस थी। काडे में ईश्वर के घर की लीग थी और चूर इसकी राजधानी थी। एंगेडाइन इसमें शामिल था। इन लीगों का सम्बन्ध स्विस संघ शासन से था। जब प्रथम महायुद्ध का समय आया तो वियना में १८१४-१५ में योरुप का पुनर्निर्माण हुआ और उसी के फल स्वरूप ग्रीसन्स स्विस कन फेडरेशन का कैन्टन बन गया।

टोडी के एक बड़ी पर्वतीय श्रेणी है इसमें बुन्दर ओबर लैण्ड की गहरी घाटी है। इस घाटी ने न केवल राइन के दो हिमागार रहेटिक तथा स्विस उद्गमों को अलग कर दिया है वरन् निवासियों का भी विभाजन कर दिया है। इसी कारण निवासी रहेटिक तथा हेल्वे-टिक कनफेडरेशन के नाम से प्रसिद्ध दक्षिण की ऊँचाई

पर स्थित घाटियों के आने जाने के साधनों की सरलता घाटों होकर इटली के घाटों से है जिससे उच्च प्रदेशों की भाषा रोमनास्च है। इसी कारण हाई लैण्ड के निवासियों ने इटली में सरलता पूर्वक आकर विजय भी प्राप्त की थी। होहेन रहेटोन जो गटरूस्केन लोगों का केन्द्र कहा जाता है थूसिस के ऊपर स्थित है। यह रहेटिक की गहरी घाटियों के सिरे पर स्थित है। इसी कारण चूर का वर्णन उच्च प्रदेशों के रक्षा इतिहास में कम आता है इसका वर्णन रोमन क्रिश्चियन तथा ट्यूटन इतिहास में अधिक मिलता है।

उत्तरी भाग में भीतरी कठिनाइयां स्चीन, वियामाला तथा राइन द्वार काट कर बनी हुई रीचेनाऊ के पश्चिम वाली कंदराओं से अधिक हो गई हैं। यह बुन्दर ओबर लैण्ड के मार्गों को बन्द कर देती हैं। इस लिये मध्य कालीन समय में जर्मनी रक्षक सैनिक चूर होकर नहीं आये वरन् फुरका तथा ओबेसल्प घाटों होकर आये थे। उसके पश्चात् जब ग्राबुन्देन की तीनों लोगों का बंटवारा हुआ तो उन पर भी इन्हीं कठिनाइयों का प्रभाव पड़ा। ग्राबुन्द, वियामाला तथा रीचेनाऊ के

ऊपर स्थित कंदराओं से बन्द था जब कि जेहनग्रीचेन बुन्द खुली घाटियों पर स्थित था। वहां से फाडे को मार्ग जाता था तथा चूर को जूलियर घाट, ओबर हान्स्टीन घाटी और लेञ्जरहीथ से सरल मार्ग थे। इसका प्रभाव योरुप के इतिहास पर गहरा पड़ा।

स्वाबियन राइन

रागाज़ से राइन नदी उत्तर की ओर ३० मील तक बह कर कांसटेंस झील को पहुंचती है। इस भाग में नदी की घाटी के दोनों ओर बनैले पर्वत स्थित हैं। इन पर्वतों के ढालों पर अंगूरों के बाग़ हैं। बढ़िवाल वाले मैदान धीरे धीरे चौड़ होते गये हैं और झील के समीप पहुँच कर डेल्टे का रूप धारण कर लिया है जो ५ मील चौड़ा है तथा वहाँ मक्का की उपज खूब होती है। इस भाग में कछारी भूमि की परतें हैं जिसके नीचे कड़ी पत्थर की चट्टान है। हिमागारों तथा बेसिन में भीषण वर्षा के कारण नदी में अचानक बाढ़ आ जाती है। इस बाढ़ के खतरे से बचने के लिये नदी के दोनों तटों पर बांध बना दिये गये हैं जिससे नदी का धरातल समीपवर्ती धरातल से ऊँचा हो गया है। इस नदी के

दाहिने तट पर फेल्ड किर्च तथा डोर्नबिर्न और बाएं तट पर आल्स्टाटेन नगर स्थित हैं जिन्हें सदैव नदी से भय बना रहता है। यहां तक कि झील पर स्थित ब्रेगेञ्ज तथा रोर्सचाच बन्दरगाह भी नदी के मुहाने से दूर कड़ी भूमि पर बसाये गये हैं। इन्हीं बन्दरगाहों से मध्यवर्ती काल में राइन घाटी होकर चूर तथा रहेटिक घाटी होकर सामान इटली को आया जाया करता था।

नदी के दोनों ओर पर्वतों की ऊँचाई ४ हज़ार फुट है जिससे स्विस तथा आस्ट्रियन आल्प्स दोनों अलग हो गये हैं। पर कहा जाता है कि कुछ समय पूर्व राइन नदी का बहाव इस मार्ग पर नहीं था। घाटी की बाईं दीवार में रागाज़ से चार मील उत्तर की ओर एक मार्ग है जो नदी के धरातल से २० फुट नीचे काट दिया गया है। यहां एक भीटे पर सरगान्स का छोटा नगर अपने दुर्ग के साथ स्थित है। इस नगर की स्थित के कारण ही राइन नदी का बहाव सीज घाटी में होकर जाने से रुक जाता है। सीज् घाटी में वालेंस्टाट तथा ज़्यूरिच की घाटियां स्थित हैं। सरगान्स तथा वालेंस्टाट के मध्य पत्थर के रोड़ों के ढेर लग गये हैं। यह रोड़े

आबुन्देन की चट्टानों से बह कर आये हैं। भूगर्भ के पंडितों का अनुमान है कि जब राइन नदी इस मार्ग से होकर बहती थी तभी यह रोड़े बह कर आये होंगे। कहा जाता है कि बाढ़ से बचाव के लिये सागन्स पर सत्रहवीं शताब्दी में भी बनावटी बांध बनाए गए थे।

स्विस लोगों से सारगन्स का गढ़ उनके आरम्भ कालीन स्वतंत्रा के दिनों में मोल लिया गया था क्योंकि पूर्व राइन नदी ने जो मार्ग छोड़ दिया था उससे कनफडरेशन के केन्द्रों का खुला मार्ग आबुन्देन तथा टीरोल से बन जाता था।

वालेन्स्टाट झील के तट पर सारगन्स से पश्चिम की ओर जो फार्म या गाँव प्रूमास्च, सीगुन्स, टेर्ज़ेन, क्वार्टेन और विग्नटेन नामक स्थित हैं उनके नाम प्रीमा, सेकुन्दा, टेरिशा, क्वार्टा और क्विंटा नामक रोमन स्टेशनों के नाम पर रक्खे गये हैं। यह स्टेशन जूलियर घाट से होकर जाने वाली बड़ी सड़क पर स्थित थे। आज इस मार्ग का उपयोग वास्ले वाली रेलवे लाइन करती हैं साथ ही साथ इसी रेल मार्ग

होकर वियना को एक्सप्रेस जाती है जो अर्लबर्ग से इन्सब्रुक वाली सुरंग होकर गुज़रती है।

वर्तमान तथा पूर्व राइन की गहरी तथा चौड़ी घाटियों के मध्य आल्प्स का त्रिभुजाकार अलग एक खंड खड़ा है जिसका नुकीला कोण दक्षिण की ओर है। इसमें राइन तथा वालेंस्टाट झील की ओर सीधे लगातार ढाल हैं पर उत्तर-पश्चिम की ओर थागाऊ का अधिक सरल ढाल है। इस प्रदेश में ऊँची तथा नीची भूमि के मध्य साधारण रूप से कान्स्टेन्स झील पर स्थित रोमनशोर्न से जूरिच झील पर स्थित रोपर-स्वील को एक रेख खाची जा सकती है। थूर तथा उसकी सहायक नदी सिट्टेर इस पर्वतीय द्वीप होकर थुरगाऊ के नीचे उतरती हैं। इन नदियों के उद्गम राइनवार्ड किनारे पर स्थित हैं। इन नदियों की घाटियां दक्षिण की ओर पहाड़ों से घिरी हुई हैं। इन दोनों में दक्षिण वाली श्रेणी में सात चोटियां हैं जिसे कुरफुस्टेन या एलेक्टर कहते हैं क्योंकि मध्यवर्ती काल में सात एलेक्टर (मतदाता) थे। इस पहाड़ी की दक्षिणीचट्टान उजाड़ है जिसमें बनस्पति का नाम नहीं है। इसमें

पानी की भी कोई झील नहीं है और कोई सड़क बनाने का भी स्थान नहीं है। इसकी ऊँचाई ३ हज़ार फुट है। उत्तरी ढाल सरल है उसमें घास है और वह टोगेनबर्ग या थूर की घाटी को उतर कर जाता है। इसके सामने सैन्टिस सीधा सामने वाला भाग स्थित है जो ७ हज़ार फुट ऊंची एक सुन्दर चोटी है। सैन्टिस के उत्तरी भाग में सैकड़ों पहाड़ी नदी नाले हैं जो सिहेर नदी में मिलते हैं। सिहेर नदी अप्पे न्जेल की प्रसिद्ध घाटी होकर बहती है।

सारगन्स से गैलेन तक समस्त पहाड़ी तट सेंट गैलेन कैंटन में सम्मिलित है। इस कैंटन के भीतर अप्पे ञ्जेल का छोटा कैन्टन उसी भांति स्थित है जैसे कि नारियल में गरी का गोला स्थित रहता है। टोगेन बर्ग की घाटी और अपेन्जेल के बाहरी ढाल सेन्ट गैलेन के हैं। सैंटिस चोटियां अप्पेंजेल तथा उसकी सहायक घाटियां, अल्पाइन चरागाहें जो राइन केसमीप कान्स्टेंस झील तक फैली हैं अप्पेजेंल कैंटन में सम्मिलित हैं।

यह छोटा कैन्टन पहाड़ी है और इसका कोई भी

भाग राइन की घाटी से १ हज़ार फुट से नीचा नहीं है। यद्यपि सेन्ट गैल्लेन के आल्पस पर्वतों तथा अप्पेजेंल में सदैव बरफ नहीं ढकी रहती है तो भी इनका दृश्य, चोटियों, करारों, झीलों, संकरी घाटियों, चरागाहों तथा वनों के कारण अपूर्व है। ग्रीष्म काल में इनके ऊंचे घास के मैदान गायों के झुण्ड तथा पुष्पों से परिपूर्ण रहते हैं। चारों ओर गायों के गले की घंटियां सुनाई पड़ती हैं तथा दूध दुहने वाली लड़कियों के सुरीले गानों का नाद सुनाई पड़ता रहता है। यह जिला समस्त अलपाइन प्रदेश में सब से अधिक धनी है। प्रत्येक किसान का घर रोजगार का केन्द्र सा बना है और घरों के कारखानों का काम पानी से उत्पन्न शक्ति से चलता है। गैल्लेन में बड़ा सुन्दर मलमल तयार होता है जो विदेशों को भेजा जाता है।

इन कैन्टनों के निवासी अपनी शक्ति तथा बुद्धि के कारण बड़े धनी हैं तथा उनका अपना एक अलग ही इतिहास है। इन का पहाड़ी दुर्ग थूरगाऊ है। यह राइन तथा जूरिच घाटियों के समागम पर मार्गों के ऊपर स्थित है। अपनी सुन्दर स्थित के कारण यह स्विस

कैन्टनों के मुक़ाबिले का बन गया है। योरुप के प्रत्येक पौराणिक कालीन इतिहास में इसने अपना अपूर्व हाथ बंटाया है। जिस समय इंगलैंड में सैक्सनों ने आक्रमण किया था और आयरलैण्ड में इंगलैण्ड की संस्कृति को बचने का स्थान मिला था उस समय यह कैंटन रोम के साथ ही साथ उन्नति कर रहे थे। उसी समय एक आयरिश साधु एक दूसरे साधु के साथ रोम के लिए बोट द्वारा चला था और कान्सटैंस की झील की यात्रा की थी। उस समय सड़कों से यात्रा करनी कठिन थी। यहां आकर वह बीमार हो गया और उसकी नाव रोर स्चाच नगर के स्थान पर लगी। उसके साथी लोग रहेंटिक घाटों होकर (चूर के मार्ग) आगे बढ़े। पता नहीं क्या सोच कर सेन्टगैलन ने यहाँ के लोगों का धर्म परिवर्तन कराने की बात सोची थी। उसने अपना मठ स्टीनाच नदी के उद्गम पर झील से १ हज़ार फुट की ऊंचाई पर स्थापित किया आज उसी स्थान पर उसके नाम का बड़ा (३० हजार संख्या वाला) करी गरी वाला नगर स्थित है। साधु का मक़बरा तीर्थ स्थान बन गया है। यहीं पर एक अबे बनाई गई।

राइन-दर्शन

जब दक्षिण की ओर से मूर लोगों का आक्रमण हुआ तो उससे अबे की रक्षा के हेतु एक दीवार बनाई गई थी। इस सुरक्षित दीवार के बन जाने से दूसरे लोगों का भी ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ जिसके कारण लोग वहां आकर बसने लगे और आज वहां पर बड़ा रोजगारी नगर बस गया है।

वह एक तीर्थ स्थान भी बन गया है। सेंटगैलेन के साधु अपनी बुद्धि तथा कुशलता के लिये सदैव प्रसिद्ध रहे हैं। रिनायसां से कई सदियों पूर्व वहां के निवासी यूनानी तथा लैटिन भाषाओं का अध्ययन करते थे वह प्राचीन पुस्तकों की रक्षा करते थे और उनकी नकलें किया करते ये। आज भी सेंट गेलेन की पुस्तकालय हस्त लिखित पुस्तकों के ध्यान से अमूल्य है।

चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं सदी में जब लूसर्न झील के चारों ओर के बनैले कैन्टनों के निवासियों ने अपने निर्दयी शासकों को निकाल बाहर किया तो स्वतंत्रता का आन्दोलन सेन्टगैलन के पर्वतों पर भी फैल गया। सिहेर की घाटी मठाधीश का देहाती घर था। अप्पे-

सेल था मठाधीश का कमरा। यहीं पर क्रांति का केन्द्र था और यहीं पर बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ लड़ी गईं। आस्ट्रिया के ड्यूक तथा हैप्सबर्ग के ड्यूक मठाधीश की सहायता के लिये आये थे। ऊपरी घास के मैदानों में राइन की घाटी में अल्टस्टाटेन से एक मार्ग सेंटगैलीन को जाता है। यहां मठाधीश तथा ड्यूक को परास्त हुई थी और अप्पेंजेल के निवासियों को स्वतंत्रता प्राप्त हुई थी जिसके फलस्वरूप वे लोग पहले आपस में संगठित हुये और उसके पश्चात् लूसरेन के स्विस के साथ सम्मिलित हो गये। फिर भी निचले ढालों पर मठाधीश का शासन चलता चला रहा इस प्रकार छोटा प्रजातंत्र राज्य चारों ओर से मठाधीश के राज्य से घिरा हुआ था। स्टोस घाट की लड़ाई के पचास वर्ष पश्चात् सन्ट गैलेन का मठाधीश स्विस लोगों से संधि कर लिया और इस प्रकार प्रजातंत्र का मानने वाला बन गया।

जब रिफारमेशन का समय आया तो अप्पेंजेल के लोगों में आपस में झगड़ा खड़ा हो गया। जूरिच का ज्विंगली (सुधारक) वाइल्ड हौस में उत्पन्न हुआ था।

यह स्थान मठाधीस के राज्य में था। अप्पेन्जेल के निवासी आपस में राजी हुये कि वह दो भागों में विभाजित हो जाय। जो लोग सैंटिस के ठीक नीचे रहते थे प्राचीन धन को मानते रहे और उन्होंने भीतरी रोडेन अप्पेन्जेल नामक प्रजातंत्र राज्य स्थापित किया। दूसरे पश्चिम, उत्तर और उत्तर पूर्व के निवासी जिनकी चरागाहें जूरिच के समीप स्थित थीं उन्होंने सुधेर धर्म को माना और औसेर रोडेन की स्थापना की। इसकी कोई भी राजधानी न थी। संघ शासन के लिये दोनों रोडेन राजी हो गये जिसके द्वारा प्रत्येक से एक प्रतिनिधि स्विस फेडरल प्रतिनिधियों की मीटिंग में भेजा गया। भीतरी कार्यों के लिये दोनों अलग अलग अब तक काम कर रहे हैं। दोनों की धारा सभाओं की बैठक अप्रैल मास में होती है। आसेर रोडेन की धारा सभा में दस हजार लोग भाग लेते हैं। सेंट गैलेन और टोगेन बर्ग की घाटी अठारहवीं सताब्दी तक अपने मठाधीस से लड़ते रहे और अंत में उन्हें फ्रांसीसी क्रांति के समय छुटकारा मिला और नैपोलियानिक युद्ध के पश्चात् जब संधि हुई तो सेंटगैलेन बाईस कैन्टनों में से एक कैंटन माना गया।

सेंटगैलेन नगर टोगेनबर्ग और ओसर रोडेन के रोजगारों में अब भिन्नता होगई है। अब आल्प्स में ओसेर रोडेन का जिला अधिकतम घने बसे जिलों में से है। जब कि सेंट गैलेन केवल एक नगर ही है। भीतरी रोडेन जो अब रोमन कैथलिक है उसमें बहुत कम परिवर्तन हुआ है, धनी भी कम हुआ है। विदेशी जब यहां आकर यहां की प्राचीन वस्तुओं का निरीक्षण करता है तो उसे पता चलता है कि दोनों राज्यों के निवासियों की धारणा एक ही थी यद्यपि उनके विचारों में भिन्नता था। भीतरी प्रदेश में कान्सटेन्स विन्टरथूर, केल्डकिर्च, लैण्ड के समीपवर्ती नगरों की पताकायें हैं। यहां जिनेवा तथा वेनिस आदि नगरों की भी पताकायें हैं।

सरगन्स से कान्सटेन्स की झील तक राइन नदी स्विटजरलैण्ड की सीमा बनाती है। नदी के पूर्व की ओर दो छोटे राज्य हैं जिन्हें लिचटेंसटीन तथा ओरालबर्ग कहते हैं। ओरालबर्ग आस्ट्रिया की क्राउन भूमि है। लिचटेंसटीन का प्रिन्स भी आस्ट्रिया का निवासी है पर १८६३ ई० में जब योरूपीय राजनीतिज्ञों ने योरुप

के मानचित्र का निर्माण किया तो वह उसे भूल गये पर वह वहाँ का राजा है। इसकी लम्बाई १० मील है। १८६६ ई० के पूर्व इसे जर्मनी के संघशासन के लिये सैनिक सहायता प्रदान करनी पड़ती थी और सेना देनी पड़ती थी।

ओरार्लबर्ग एक ज़िला है और वह सेंट गैलेन तथा अप्पेन्जेल से बड़ा है। दक्षिण की ओर यह रहेटिकन पहाड़ी रीढ़ द्वारा ग्राबुन्देन से पूर्व की ओर राइन तथा डैन्यूब की जल विभाजक भूमि द्वारा टीरोल से अलग है। इस जल विभाजक में इन्सब्रुक तथा लैण्डेक से अर्लबर्ग घाट मुड़ता है। राइन वार्ड ढाल पर अर्लबर्ग के आगे टीरोल से अलग होने के कारण इसका नाम अरार्लबर्ग पड़ा है। यहां स्वाबियन वंश के वहीं जर्मन नसल के लोग निवास करते हैं जिससे स्विस लोग हैं परन्तु अर्लबर्ग के पीछे वाले टीरोल निवासी बवैरियन नसल से हैं। चरागाहों तथा वनों के अनुसार वोरार्लबर्ग स्विजरलैण्ड से मिलता जुलता है। सेंटगैलेन की भांति यहाँ भी बहुत से रोज़गार तथा कारखाने चालू हैं इसी कारण इसके किसान शिक्षित तथा

धनी हैं। आर्लबर्ग की सुरंग बनने के पूर्व (जो इसे अब टीरोल से अलग कर देती है) ओरार्लबर्ग का घनिष्ट सम्बन्ध (राजनैतिक छोड़ कर) वियना की अपेक्षा स्विटज़र लैण्ड से था। पर राइन नदी पर अपने पड़ोसी प्रदेशों की भांति ओरार्लबर्ग के इतिहास का निर्माणकर्ता नहीं रहा है। इल तथा ब्रेगेञ्जर आय की चौड़ी घाटियां बड़ी राइन सड़क पर खुले रूप से पश्चिमी सीमा पर उतरती हैं और अपने अल्पाइन प्रदेश को सरल मार्ग बनाती हैं ब्रेजेञ्जेर वाल्ड के ढालों तथा अप्पेञ्जेल की पहाड़ी दीवार में विषम भिन्नता पाई जाती है।

कान्सटेन्स झील को जर्मन लोग बोडेन सागर कहते हैं। यह झील ५० मील लम्बी तथा लगभग १० मील चौड़ी है। इसका क्षेत्रफल लन्दन की काउन्टी से दुगना अर्थात् लगभग २०० वर्ग मील है। इसके जल का ऊपरी भाग समुद्र के धरातल से १३०० फुट ऊँचा है। सबसे अधिक गहरे भाग में झील की गहराई ९०० फुट है इसी कारण इसका बेसिन समुद्र-तल से ४०० फुट नीचा है। शीतकाल में झील के चारों ओर

बरफ जम जाती है और १०० वर्षों में एक या दो बार यह समस्त झील बरफ से जम जाती है। इस झील के दोनों ओर स्वाबिया के ऊँचे मैदान स्थित हैं। उन मैदानों की अपेक्षा कान्सटेंस झील के तटों की जलवायु अधिक अच्छी रहती है क्योंकि झील के तटों से मैदानों को धीरे धीरे भूमि ऊँची होती चली गई है और अंत में उसकी ऊंचाई एक हज़ार फुट से अधिक हो जाती है। इसलिये बेडेन सागर में अच्छी धूप रहती है जिसके चारों ओर अंगूर तथा दूसरी वस्तुओं वाटिकायें तथा कुंज हैं। इसकी प्रधानता केवल इसकी सुन्दरता के कारण ही नहीं है वरन् इसकी विशेष स्थित के कारण है। यह आल्प्स तट तथा जूरा के मध्य स्थित समस्त मैदान में फैला हुआ है जो स्विटज़रलैण्ड तथा फ्रांस के मध्य सीमा बनाता हुआ आगे उत्तर-पूर्व ओर दक्षिणी जर्मनी की ओर बढ़ गया है। इस प्रकार बोडेन सागर स्वाबिया की भूमि दो भागों में विभाजित हो गई है जो बाएं तट पर स्विस तथा दायें तट पर जर्मन है। इसमें आवागमन का एक मात्र साधन पानी का मार्ग है क्योंकि उत्तर की ओर आल्प्स पर्वत और

दक्षिण की ओर जुरा है। इसी कारण अल्पाइन झीलों में बोडेन सागर से अधिक किसी दूसरी झील द्वारा न तो व्यापार होता है और न यात्रा हो की जाती है।

कान्सटैन्स की झील एक अन्तर्राष्ट्रीय झील है। इसके तट के प्रत्येक देश ने इसके कुछ न कुछ भाग पर अधिकार कर रक्खा है। इसके तट पर ब्रेगेञ्ज नगर आस्ट्रिया का बन्दरगाह, लिंडायु बवेरिया का, फ्रोडरीचशाफेन उर्टेम्बरजेर का, कान्सटेन्स, बेडनेर का, रोमनशर्न स्विस थुर्गाऊ का और रोर्सचाच स्विस सेंट गैलेन का बन्दरगाह है। झील में चलने वाले स्टीमरों ने आस्ट्रियन, बवेरियन, अरटेमर्वजेर रेलों को स्विस रेलों को रोमनशोर्न तथा रोर्चाच स्थान पर मिलाते हैं। रोमनशोर्न आजकल नाज लाने के लिये प्रधान बन्दरगाह है। चूंकि स्विटज़रलैण्ड में वहां की आवश्यकता से कम नाज उत्पन्न होता है इस लिये दक्षिणो-पूर्वी जर्मनी से नाज मंगाने की आवश्यकता पड़ती है। प्राचीनकाल में जब उत्तरी योरुप से इटली को राइन नदी होकर मार्ग जाता था तो इस झील के किनारे किनारे नावें चलती थीं आर-पार नहीं चलती थीं।

इसी कारण उनका नाम भी कान्सटेन्स और वोडमान बन्दरगाहों के नाम पर पड़ा है। रोमन लोगों के लिये ब्रेगेञ्ज से ब्रिगानटिनस मार्ग था। यह बन्दरगाह दक्षिणी सिरे पर है। जो आल्प्स के ऊपर वाली सड़क अंतिम सिरे पर था।

बोडेन सागर के उत्तरी सिरे ने लंकरा होकर एक लम्बी खाड़ी का रूप धारण कर लिया। उबेरलिंजेन झील या सागर जिसके किनारे सीधे खड़े हैं कम अच्छे माने जाते हैं। उबेरलिंजेर की समानान्तर उन्टेर या लोअर झील है जिसे राइन नदी कान्सटेन्स पुल के नीचे एक चैनल होकर छोड़ती है और अपर झील से एक या दो फुट नीचे उतरती है। उबेरलिङ्गेर तथा उन्टेर झील के मध्य एक लम्बा प्रायद्वीप है जिसमें होकर बेडेस रेलवे कान्सटेन्स को जाती है जो बाएं तट पर स्थित होते हुये भी ग्रैण्ड डची का है। यह जर्मन भाग स्विस की ओर स्वावियन इतिहास में एक विशेष स्मृात है। बोडेन सागर पर स्थित स्चाफ हासेन, कान्टेन्स, लिन्डाउ आदि छोटे नगर जल मार्ग द्वारा जुड़े हैं। यह छोटे नगर एम्परेर के समय में छोटे

छोटे स्वतंत्र राज्य थे। उनके चारों ओर दूसरे छोटे छोटे स्वायत्त शासन प्राप्त राज्य थे। मध्य काल के अंतिम समय में जब कि हैब्सबर्ग अपनी शक्ति संग्रह कर रहा था तो कान्सटेन्स बहुधा स्विस नगरों (खासकर ज़ूरिच और बर्न) के साथ सम्मिलित रहता था। पहले स्वतंत्र नगरों के सम्बन्ध में बर्गरो तथा विशप के मध्य झगड़ा हुआ करता था। सोलहवीं शताब्दी में रिफारमेशन के पश्चात् आस्ट्रियन तथा स्पेन वालों में कान्सटेन्स नगर ज़बरदस्ती प्रोटेस्टेंटों के हाथों से छीन लिया जिससे उसकी स्वपंत्रता जाती रही और वह स्विस नगरों के संघ में मिल गया। इस लिये यह अवांछनीय हो गया कि पन्द्रहवीं शताब्दी की बड़ी कौंसिल में चर्च के लिये स्थान प्राप्त करने के लिये प्रयत्न किया जाय।

कांसटैंस झील की बनावट समझने के लिये जानना आवश्यकीय है कि आइस एज (हिमकाल) में ग्रीसेन्स की राइन घाटी से एक बड़ा हिमागार निकला और वह वायु के कारण जूरा तक समस्त स्वाबियन मैदान में फैल गया। हिम काल के पूर्व यह सम्भव है कि बोडेन डैन्यूब नदी की एक सहायक नदी

रही हो। यदि ऐसा रहा होगा तो वह कहीं अधिक ऊँचे स्थान पर रही होगी क्योंकि उत्तर-पूर्व की ओर अधिक दूरी पर डैन्यूब नदी के तट पर उल्म स्थित है। उसकी उँचाई वर्तमान झील के धरातल से ३०० फुट अधिक ऊंची है। अर्जेन तथा स्चूसेन की छोटी नदियां अब उर्टेम्बर्ग तथा बवेरिया से बोडेन सागर में उतरती हैं जो स्वाबिया के ऊँचे मैदान में गहरी घाटियां बनाती हैं राइन तथा उल्म और डैन्यूब की सहायक नदियों के मध्य जो जल विभाजक ऊंची भूमि बन गई है वह राइन हिमागार द्वारा ही लाए हुये पत्थरों से बनी है।

बोडेन सागर के उत्तर-पश्चिम उबेर्गलिंजेर तथा अंटेर झीलों के आगे दूसरे पहाड़ी भीटे केवल हिमागरों द्वारा ही नहीं वरन् भूकम्पों द्वारा भी बने हैं। इस ओर हेगायु का नीचा प्रदेश है। जो जूरेसिक चूने के पत्थरों की पहाड़ियों के मध्य छिप गया है और फिर चारों ओर के मैदान से १ हज़ार से २ हज़ार फुट तक ऊँचा है वहां शुंडाकार पहाड़ियां हैं जिनके ऊपर गढ़ बने हुये हैं। इनमें से होहेन्टवील नामक गढ़ पर उर्टेम्बर्ग का अधिकार है यद्यपि उसके चारों ओर बेडेन का प्रदेश

है। होहेन्टवील आल्प्स प्रदेश में एक सुन्दर प्रदेश है जो मांट ब्लांक तक फैला हुआ है।

पूर्व हिमाकाल में राइन नदी बोडेन सागर को बचाती रही है। किसी समय इसका उद्गम अप्पेर लेझन सागर से उस स्थान पर प्रतीत होता था जहां अब स्टाकाच और क्लेटागायु हैं। क्लेटागायु के नीचे अब राइन की सहायक नदी अटाच प्रवाह करती है। फिर बाद में पता चला कि उसका निकास उन्टेर सागर के अंत से है जहां अब आच तथा विञ्जेर स्थित हैं। राइन नदी का उद्गम उन्टेर सागर से नहीं वरन् उसके बगल से है। वह एक चौड़ी नाव चलने योग्य चैनल बनाती है जो झील की एक लम्बी भुजा का काम देती है और स्चाफहासेन तक फैली है। यह कांसटेन्स से ३० मील तथा ब्रेगेञ्ज से ६० मील है। स्चाफ हासेन के ठीक दक्षिण की ओर राइन नदी जूरा के चूने के पथरीले वाले प्रदेश से नीचे उतरती हुई सत्तर फुट ऊंचे प्रसिद्ध प्रपात बनाती है। पानी मोडेन सागर में जाता है। जहां प्रपात गिरता है वहीं पर एक पिरेमिड (पत्थर का) केन्द्र में स्थित है जो प्रपात को दाहिने

तथा बाएं दो भागों में विभाजित कर देता है। प्रपात के कारण इस पिरेमिड को अब तक कोई हानि नहीं पहुँची है। यद्यपि स्चाफहासेन का नगर तथा समीपवर्ती प्रदेश राइन नदी के तट पर स्थित हैं तो भी वह कान्सटेंस के बदले में स्विटज़रलैंड का ही अधिकार है। इन प्रपातों से बिजली तयार की जाती है जिससे कारखानों का कार्य चलता है।

उन्टेर सागर में राइन के निकास के सामने रीचेनायु नामक द्वीप स्थित है जहां एक हज़ार वर्ष पूर्व एक मठ स्थित था जो फ्रांसीसी क्रांति के समय तोड़ दिया गया। अब भी उस मठ के भग्नावशेष हैं जिन्हें यात्री लोग देखते हैं। यात्रियों को इन्हें देखने से मध्य कालीन समय की सुध आ जाती है जब कि राइन की घाटी न केवल व्यापारियों के लिये वरन् धार्मिक प्रचारकों के लिये प्रधान मार्ग बनाती थी। रीचनायु, कान्सटेंस, सेंटगैलेन, एफाफेर्स, डिसेन्टिस आदि स्थान थे जहां पादरी लोगों ने आकर मध्यकाल के प्रथम समय में संस्कृति के बीज बोये थे। स्चाफहासेन से कुछ मील दक्षिण रीनायु का द्वीप है। यह

फिन्डान नामक आयरिश साधुओं के थे जिन्होंने राइन घाटी के जर्मन लोगों का धर्म परिवर्तन कराया था। बास्ले की ओर नदी के तट पर और नीचे सैकिञ्जेन स्थान पर भी एक बड़ा मठ था जिसे आयरलैण्ड के साधुओं ने बनाया था।

यहाँ राइन नदी के दाहिने तट पर एग्लिसायु स्विस प्रदेश स्थित है। बास्ले के आगे राइन नदी स्विटज़रलैण्ड तथा जर्मनी के मध्य सीमा बनाती है। इस भाग में राइन नदी की थूर अराय तथा और तीन सहायक नदियां हैं। थूर नदी में बाढ़ अधिक आती है इसलिये उसे कान्सटेंस झील में मिलाने का प्रयत्न किया जा रहा है। अराच नदी ब्लैक फारेस्ट (काला वन) का पानी लाकर राइन में डालती है। आर नदी दक्षिण की ओर से स्विटज़रलैण्ड के दो तिहाई भाग का पानी लाकर राइन में डालती है। लौफेनबर्ग स्थान पर राइन नदी में दो छोटे नगरों के जोड़े स्थित हैं जिनमें एक जर्मन तथा दूसरा स्विस नगर है। यह दोनों नगर एक लकड़ी के पुल द्वारा जुड़े हुये हैं। राइन नदी में इस प्रदेश में पर्वतीय होने के कारण) बहुत से ढाल हैं

जिससे नावों का चलना कठिन है। रहीनफेल्डेन के ढाल के आगे नदी पश्चिम से उत्तर को मुड़ जाती है। यहाँ नदी के स्वच्छ हरे जल के ऊपर बास्ले के पुल बने हैं। इसके आगे चल कर नदी जर्मनी में प्रवेश कर जाती है।

आर प्रदेश

आर नदी स्विस गॉब्लेञ्ज में सहायक नदी की स्थित से प्रवेश करती है। यह नदी राइन नदी में बहुत पानी लाकर डालती है।

रोन नदी पर मार्टिगनी स्थान तथा चूर नगर राइन नदी पर स्थित है। स्विटजरलैण्ड में मार्टिगनी से चूर तक एक लम्बी घाटी है। इस घाटी के आधे उत्तरी-पूर्वी भाग का पानी राइन नदी द्वारा उत्तरी सागर में जाता है और दक्षिणी-पश्चिमी आधे भाग का पानी रोन नदी द्वारा रोम सागर में जाता है। राइन नदी चूर स्थान से और रोन नदी मार्टिगनी स्थान से निकलती है।

मार्टिगनी और चूर के मध्य १२० मील लम्बी एक पर्वतीय दीवार है जो दक्षिण की ओर खड़ी तथा उत्तर

की ओर ढालु है। इस पहाड़ी दीवार का पानी आर नदी के उद्गम शाखाओं द्वारा आर में आता है। इस पर्वतीय दीवार में मार्टिगनी से चूर तक बहुत सी चोटियां हैं जिनकी ऊंचाई १० हज़ार फुट से कम नहीं है मध्यवर्ती चोटियां १४ हज़ार फुट तक ऊंची है। इस पहाड़ी दीवार में कोई दर्रा नहीं है केवल ४ हज़ार फुट की ऊंचाई पर एक कंदरा है जिसमें होकर रूज़ नदी दक्षिण की ओर से आती है। मार्टिउनी से घाटियों तक एक सड़क गई है। रोन हिमागार पर ८ हजार फुट की ऊंचाई पर फुर्का घाट होकर सड़क रुज की उर्सरेन घाटी में उतरती है। ऐंडेरमाट स्थान पर (४७,०० फुट) रूज़ नदी उत्तर की ओर घूम कर कंदरा में प्रवेश करतो हुई आर में मिल जाती है। सड़क ओबेराल्प घाट (६७०० फुट) डिसेन्टिस तथा चूर स्थानों को चली जाती है। तेरहवीं शताब्दी तक उत्तर से दक्षिण आने के लिये कोई मार्ग नहीं था इस लिये ओबेराल्प घाट तथा रहेशिया होकर ही स्विटज़र लैण्ड से बाहरी संसार का आवागमन होता था।

उर्सरेन की घाटी से रूज नदी चार मील लम्बी

पहाड़ी कंदरा की ओर घूमती है। इस कंदरा में पानी १ हजार फुट की ऊंचाई से गिरता है। बड़ी सड़क उर्सरेन २० मील लम्बी सुरंग द्वारा छोड़ती है। पहले पहाड़ी नदी के ऊपर जंजीर द्वारा एक लकड़ी का पुल लटकता था उसके पश्चात् उर्नेर लाच बनाया गया। इस सुरंग के पश्चात् रूज नदी पर ग्रेनाइट का एक पुल एक मेहराब का बना है जो १०० फुट का है उसके नीचे डेविल का पुल है। इस स्थान पर पहले ऊंटों का मार्ग था। इस पुल के निर्माण होने के पूर्व स्चोलेनेन कंदरा का पार करना असम्भव था।

कंदरा के नीचे उर्सरेन की प्रसिद्ध ऐतिहासिक घाटी ऊरी आरम्भ होती है। यह डिसेंटिस का मठ से अलग करके ऊरी कैंटन में मिला दी गई थी। फ्लूलेन स्थान पर रूज नदी लूसेरन झील में प्रवेश करती है। यह खाड़ी उरनेर सागर या ऊरी झील के नाम से प्रसिद्ध है। झील के दोनों ओर पर्वतीय चट्टानें इस प्रकार झुकी हुई खड़ी हैं कि यह एक कंदरा सी प्रतीत होती है। १८६४ ई० में पूर्वी चट्टानों को तोड़ कर ऐक्सेंट्रा से सड़क ऊरी तक बनाई गई।

देश दर्शन

लूसरेन की झील या चार बनैले कैंटनों के कारण ही स्विटज़रलैण्ड का जन्म हुआ है। इन घाटियों के निवासी एक दूसरे के साथ झील के तटीय मार्ग होकर तथा संसार के अन्य भागों से जल मार्ग होकर सम्बन्धित थे। ऊरी घाटी का स्थल मार्ग से आना बड़ा जटिल था इसलिये जल-मार्ग का ही एक मात्र साधन था। मुओटाघाटी और इंटरवाल्डन की दो घाटियाँ संसार से अलग थीं लेसरेन नगर जहाँ रूज़ नदी झील तथा आल्प्स से निकलती है समस्त बनैले कैंटनों का प्राकृतिक बाज़ार था इसलिये यह कोई असम्भव की बात नहीं है कि जब लूसरेन की लार्ड शिप का अधिकार हैब्सबर्ग के हाथों में चला गया तो बनैले कैंटनों को अपनी रक्षा के लिये आपस में संगठन करना पड़ा था।

आर, रूज और बिमाट के संगम पर हैब्सबर्ग वंश के पूर्वजों का गढ़ एक पहाड़ी की चोटी पर बना है। यह लूसरेन से ३० मील उत्तर की ओर है। हैब्सबर्ग की स्थिति बड़े मार्के की है। दृश्य देखने योग्य है। दक्षिणी पूर्वी सामने पर ज़ूरा की समतल लाइन पको

गई जिसके एक ओर जेनेवा और दूसरी ओर स्चाफ-हासेन है। जूरा के नीचे स्विटज़रलैण्ड के मैदान हैं और दक्षिण-पूर्व की ओर आल्प्स पर्वत की हिमवाली घाटियाँ हैं। हैब्सबर्ग पहाड़ी के नीचे विंडानिस्सा रोमन नगर का स्थान है। यह इस भाग के रोमन प्रान्त का केन्द्र था। पहाड़ी कोण पर लिम्मात के तट पर बेडेन स्विस नगर है जहां स्विटज़रलैण्ड की संघ पार्लियामेंट की बैठक होती थी। बास्ले से मार्ग सैकि-ञ्जेन, जूरा, गोबलेंज, लिम्मात, जूरिच, रूज, ज़ुग, थाल सागर झीलों की घाटियों, लुसरेन, आर घाटों, न्यूचैलेट फ्रीबर्ग और बर्न को जाता है। इस प्रकार पता चलता है कि हैब्सबर्ग राजकीय स्थान बनने योग्य था।

लिम्मात, रूज और आर तीनों स्विस अर्थ शास्त्र में अपना अलग अलग महत्व रखती हैं। इनकी घाटियों से दक्षिणी संसार को अलग अलग मार्ग चले गये हैं। जूरिच लूसेंन तथा बर्न नगरों ने स्विस इतिहास में अपना अपना भाग बँटाया है। जरिच बहुधा हैब्सबर्ग का साथी बना रहता था। लूसर्न आदि कालीन चार

कैंटनों की राजधानी था। बर्न अपने नाम के बड़े कैंटनों की राजधानी था जो डरकैन्टोनेन (चारों आदि कैन्टनों) के बराबर था। बास्ले नगर राइन नदी पर प्राचीनकाल से ही एक प्रधान बन्दरगाह रहा है।

बर्न से ओवरलैण्ड ६० मील तक फैला हुआ है। इसकी पश्चिमी अर्धभाग घाटियों की ओर चोटियों को एक लाइन से घिरा है। इस भाग में विल्टोर्न, वाइल्ड स्ट्रूवेल और बामहोर्न चोटियों १० से १२ हजार फुट तक ऊँची हैं और सारनेच, गाइल तथा गेम्मी पहाड़ी दर्रे सात हजार से आठ हज़ार तक ऊँचे हैं। पूर्वी भाग में पहाड़ी रीढ़ दोहरी होगई है। जिससे खाली स्थान पर आल्प्स प्रदेश का सब से बड़ा हिम मैदान (२५ मील लम्बा और १० मील चौड़ा) बन गया है। इसके पूर्व में हास्ली घाटी है जिसमें आर नदी की प्रधान धारा है। रूज़ के आगे चौड़ा ठंडा बर्फीला प्रदेश है जिसके आगे हौस्टाक, नोराब, स्चीने और ग्राण्ड होर्नेर की चोटियां हैं।

आर नदी ओबेरार तथा उन्टेरार हिमागारों से निकलती है। यह हिमागार फिन्स्टेर राहोर्न के नीचे

हास्ली घाटी में उतरते हैं। इन हिमागारों से छोटी धारायें निकल कर एक हो जाती हैं और ग्रिम्सेल के नीचे उत्तर की ओर नदी मुड़ जाती है। उसके पश्चात् नदी एक बड़ी कंदरा में प्रवेश कर जाती है। यहां पहाड़ी घाटी में हैन्डैक नामक स्विट्जरलैण्ड का सर्वोत्तम सुन्दर (१३० फुट ऊँचा) प्रपात है। इसके आगे नदी पाइन के वनों तथा पास के मैदानों होकर बहती है और चूने की पहाड़ी में ५०० फुट की ऊँचाई पर एक कंदरा बनाती है। हास्ली घाटी राइन नदी के उद्गमों का इतिहास बताती है।

मीरिङ्जेन के नीचे आर नदी पश्चिम की ओर घूमती है और ब्रींज की झील में फैल जाती है जो पहले थून झील से मिली हुई थी। लुटस्चाइन नदी के डेल्टा के कारण झील दो भागों में विभाजित हो गई है। इसी डेल्टा पर इंटेरलाकेन का (लूसर्न की समानता वाला) प्रसिद्ध नगर स्थित है। यहां स्विटजरलैण्ड के यात्री अनुपम दृश्य देखने आते हैं। यहां से सुन्दर घाटियों और चोटियों का दृश्य दिखाई पड़ता है। नीसेन के नीचे घाटियों का दूसरा समूह आरम्भ

होता है। यहां आल्प्स से निकलने के पश्चात् आर नदी थून नगर को पार करती है। यहां तमाम चोटियों तथा दर्रों से निकलती है इस प्रकार राइन नदी के समस्त सहायकों में आर नदी का एक प्रधान स्थान हो जाता है।

थून के नीचे आर नदी सब अलपाइन पहाड़ियों होकर बहता है और बर्ने स्थान पर मैदान में प्रकट होती है। यहां नदी एक पहाड़ी कंदरा बनाती है। बर्ने नगर में आने का स्थली मार्ग पश्चिम की ओर से है नगर के और दिशाओं में पुल बने हैं।

बर्नेर से आर नदी पश्चिम की ओर बहती है और ओबेर लैण्ड से साने नदी आकर इसमें प्रवेश कर जाती है। बर्ने से २० मील की दूरी पर साने नदी पर फ्रीबर्ग नगर स्थित है। यह एक रोमन कैथलिक नगर है और यहां के निवासी फ्रांसीसी भाषा बोलते हैं। ऊपरी घाटियों के निवासी जर्मन भाषा का प्रयोग करते हैं।

फ्रीबर्ग से दस मील की दूरी पर पेयर्ने तथा अवेंश्चेज दो छोटे नगर स्थित हैं। यह मैदान में न्यचा-

की ओर स्थित हैं। अवेन्चेन नगर रोमन काल का है। पेयर्ने बाद का नगर है। यह ट्रांस-जुराने बर्गंडी की राजधानी है।

अवेन्चेज़ तथा पेअर्ने के आगे न्यूचाटेल, बीने और मोरात झीलें स्थित हैं जिनमें न्यूचाटेल सब से बड़ी झील है जिसका किनारा स्विस है। इन झीलों का तट अन्य राइन झीलों से भिन्न है। इनके तट नीचे हैं। इनमें गिरने वाली नदियां बहुत बड़ी नहीं हैं।

इन झीलों के समीपवर्ती स्थान इतिहासकारों तथा भूगर्भ विद्या के विद्वानों के लिये बड़े ही महत्व के हैं। स्विटज़रलैण्ड की रक्षा में इनका विशेष स्थान रहा है। बीने की झील में सेंटपीटर द्वीप है। यहां जीन जैक रूसो की कुटिया थी। आर नदी में भी बाढ़ अधिक आती थी इस कारण एक नहर द्वारा इसका पानी बीने की झील की ओर फेर दिया गया है।

मध्यवर्ती काल के आरम्भ काल में उत्तर से स्विटज़र लैण्ड होकर दक्षिण की ओर आने का मार्ग जूरा प्रदेश होकर था। भीतरी मैदान का एक दूसरा भाग जो पूर्व से पश्चिम को था इस मार्ग को काटता था।

यह मार्ग प्रधान नगरों तथा स्थानों होकर जाते थे। स्विटजरलैण्ड के आठ कैंटनों का समस्त भाग आर के बेसिन में ही स्थित हैं।

आठ चैंटनों के संघ बन जाने के पश्चात् स्विस कूटनीतिज्ञों ने सरगन्स द्वार पर अपना अधिकार जमाया। यह स्थान सामरिक महत्त्व का था। यहीं से रूज़ की घाटी को मार्ग जाता है। ऊरी प्रदेश पर अधिकार करने के पश्चात् टिसिनों कैंटन पर भी स्विस प्रभाव बढ़ने लगा और फ्रांसीसी क्रांति के समय में वह भी स्विस संघ में सम्मिलित हो गया। उन्नीसवीं सदी में सैन बरनार्डिनो तथा स्प्लूजेन सड़कें बनीं। उसके पश्चात् रेलवे लाइनें बनाई गईं।

१७९९ ई० के युद्ध के कारण मध्यवर्ती तथा सब से ऊपरी आर बेसिन का नाम इतिहास में सदैव बना रहेगा। जब नेपोलियन मिस्र में था तो सुओरोफ रूसी सेनापति ने उत्तरी इटली होकर आगे बढ़ा था और उसने पश्चिमी भाग को जीत लिया था। वह आल्प्स पर ठहरी दूसरी रूसी सेना से मिलना चाहता था इस इस कारण वह सेंट गोथार्ड दर्रे (उरसेरेन में) की

ओर बढ़ा परन्तु उसके रूसी मित्र सेनापति को हार हो गई जिससे मरुसेना ने अपना सेना दक्षिण की ओर लौटा दी। फ्रांसीसी सेना धीरे धीरे उत्तर की ओर हटती गई और उरनेर झील के ऊपर पहुंची जहां उसे सहायता मिली रूसी जनरल पहले मओटा घाटी की ओर ओर फिर लिथ घाटी की ओर लौटने में विवश हुआ। इसी कारण स्विस संघ ने उसरेन की ओर विशेष ध्यान दिया है और उसकी किले बन्दी कर दी है जिससे स्विटजरलैंड की अंतिम रक्षा की जा सके।

आधुनिक स्विटजरलैंड बाईस कैंटनों का एक संघ है। यह सभी कैंटन समान अधिकार वाले हैं। पहले कुछ भेद भाव भी था पर अब बिल्कुल नहीं रह गया है इस प्रकार स्विटजरलैंड के सखरन कैंटन खालिस जर्मन थे और एतिहासिक दृष्टि से सदैव वह राइन बेसिन में रहे हैं।

बास्ले के ऊपर सत्तर मील तक राइन की घाटी बड़ी ही महत्वपूर्ण प्राकृतिक छटा बहती है। बास्ले में नदी का धरातल समुद्र धरातल से ८७० फुट ऊंचा है। स्ट्रासबर्ग स्थान पर नदी का धरातल समुद्र धरातल से

४७३ फुट ऊंचा है। नदी की समतल घाटी का मैदान लगभग २० मील चौड़ा है जहां वाटिकाएं तथा हरे-भरे खेत हैं। मैदान के तटों से उठने वाले ढालों पर अंगूर के बाग हैं उसके बाद पाइन के काले बन स्थित हैं। ऊपरी भागों पर चरागाहें स्थित हैं। यहीं ब्लैक फारेस्ट तथा ओमजेज के पश्चिमी ढाल स्थित हैं।

प्राचीन काल में इस भाग में वर्तमान आल्प्स पर्वतों के समानान्तर एक पर्वतीय श्रेणी स्थित थी। यह श्रेणी धीरे धीरे घिसती गई और कहीं कहीं पठार बन गये थे उसके पश्चात् वे भी घिस गये तब यह वर्तमान रूप बना है। ब्लैक फारेस्ट तथा ओमजेज इसी पर्वत के रूप हैं। इनके मध्य में एक रिफ्ट घाटी है।

जूरा तथा ब्लैक फारेस्ट के मध्य एक गहरे संकरे मार्ग होकर राइन नदी इस रिफ्ट में प्रवेश करती है। रिफ्ट घाटी का मार्ग दक्षिण की ओर जोरा द्वारा बन्द सा है। बास्ले के पश्चिम जूरा पर्वत तथा ब्लैक फारेस्ट के मध्य ट्रावी डे बेलफोर्ट या बर्गंडी का खुला द्वार है। इसकी चौड़ाई लगभग २० मील है और समुद्र से लगभग १२०० फुट ऊंचा है। इसका पानी राइन तथा रोन

नदियों में बह कर जाता है। ब्लैक फारेस्ट वन (बन) क्लाखेन चाटा से आगे ओर का दृश्य दूर तक दिखाई पड़ता है। कहते हैं कि स्वच्छ समय में आसजेन के पूर्वी किनारों तक के दृश्य दृष्टि गोचर होते हैं।

राइन के इस भाग की छटा देखने के लिये यात्रियों को ब्रेसैच स्थान को जाना पड़ता है। यह बास्ले तथा स्ट्रासबर्ग के मध्य स्थित है यह बोटों का एक पुल नदी का वेग धारा को पार करने के लिये बना हुआ है। यहां पश्चिम की ओर हरे झाड़ियों तथा घासों के मैदान के भीतर छिपा हुआ न्यूब्रासाच को गढ़ है जिसे वाबान ने बनवाया था। बोटों के पुल के पूर्व की ओर प्राचीनी ब्रीसाच का गढ़ तथा एक ज्वालामुखी पर्वतीय द्वीप है। इस द्वीप को कैसर्स तुहल कहते हैं। इस पर अंगूर के बाग हैं। समीप ही मैदान में हरे भरे खेत हैं। पुल के पश्चिम की ओर ओसजेन तथा पूर्व की ओर ब्लैक फारेस्ट है और दक्षिण की ओर जूरा का समतल भाग है। कैसर्स तुहल के उत्तरी भाग से स्ट्रासबर्ग के गिरजाघर के मीनार दिखाई पड़ते हैं।

इस प्रदेश में इल नदी राइन नदी की समानान्तर

८० मील तक बहती है और स्ट्रासबर्ग के उत्तर में आकर राइन नदी से मिल जाती है। इस भाग में राइन नदी एक प्रकार से सीमा बनाती है।

सर्व प्रथम रोमन लोग राइन नदी पर रोन बेसिन से आये थे। यह लोग बर्गंडी द्वार से आये थे और रोरीसी प्रदेश में उन्होंने आगस्टा नगर की अस्थापना की थी। बास्ले नगर का नाम चतुर्थ सदी से संसार को विदित हुआ जब कि वह एक व्यापारिक नगर बना था। यह नगर एक स्वतंत्र नगर बना और फिर छठी सदी में स्विस कनफेडरेशन से मिल गया।

प्रथम जर्मनी का रोमन प्रान्त बर्गंडी द्वार के उत्तर की ओर से आरम्भ होता था और राइन तथा ओसजेज के मध्य होकर जाता था। दूसरा रोमन नगर (स्टेशन) स्ट्रासबर्ग था। यहां राइन की सहायक नदी जोर्न द्वारा छोड़े गये स्थान में एक पहाड़ी कंदरा है। जहां होकर मेज से स्ट्रासबर्ग को एक रोमन सड़क जाती थी। ट्रोवी डे जवर्ने में पहाड़ी के ऊपर गढ़ के भग्नावशेष हैं। इन भग्नावशेषों के मध्य से सड़क, नहर तथा रेलवे अब जाती हैं।

राइन-दर्शन

रोमन काल के पश्चात् अलेमान्नी या स्वाबियन लोगों ने आर पर अधिकार जमाया था। कान्सटेंस झील का तट डैन्यूब का ऊपरी बेसिन, नेकर का बेसिन, राइन की रिफ्ट घाटी तथा बेडेन, बाडेन तक का भाग उनके अधिकार में था। हीडेलबर्ग उनके अधिकार में नहीं था। अल्सेस का मैदान स्ट्रासबर्ग के नार्ड गौ तथा मूलहसिन के सुन्ड गौ दो भागों में विभाजित था बास्ले के सामने नदी की दूसरी ओर वाली भूमि को ब्रोस गौ कहते थे।

ब्रोस गौ में ड्रीसाम घाटी के ऊपर जहरिङ्गन के कैसेल के भग्नावशेष हैं। यहां के शासक ब्रोस गौ प्रदेश के शासक उस काल तक बने रहे जब कि नार्मन लोगों ने इंगलैंड की विजय की थी। उन्होंने ही फ्रीबर्ग के नगर की स्थापना की थी जो आजकल जर्मनी के छोटे विश्वविद्यालय वाले नगरों में बड़ा ही प्रसिद्ध नगर है। इस नगर के चारों ओर जो दीवार बनी थी। अब वह नहीं है फिर भी प्राचीन काल के द्वार आदि के चिन्ह अभी वर्तमान हैं जो रोमन कला की याद दिलाते हैं।

जहरिंगेन लोगों ने ही स्विटजरलैंड में फ्राबर्ग तथा बेर्न की स्थापना बाद में की थी। उनका अधिकार सैंट गौ पर भी था। रिफार्मेशन काल से फ्रांसीसी क्रान्ति काल तक बास्ले की भांति ही मूल हासेन नगर स्विस कनफेडरेशन में मिला रहा। जहरिंगेन वंश के पश्चात् हैब्सबर्ग घराने का अधिकार हुआ जो फ्रांसीसी काल तक चलता रहा। यह घराना पहले स्विटजरलैंड से निकाला गया। उसके पश्चात् ब्रीस गौ से अलग हुआ।

स्ट्रासबर्ग के समीप राइन की ओर जर्मन की ओर्न किंजिग तथा ब्रूश नदियां उतरती हैं। यह ब्लैक फारेस्ट की नदियाँ हैं। इस तरह अपर राइन घाटी का स्ट्रासबर्ग नगर प्राकृतिक बाजार केन्द्र था। आजकल ब्लैक फारेस्ट की सुन्दर रेलवे स्ट्रास बर्ग से आरम्भ होती है और आफेनबर्ग किंजिंग घाटी, ट्रीबर्ग प्रपात, डैनूब की घाटी होती हुई स्चाफ हासेन तथा कान्स्टैन्स को जाती है। ब्लैक फारेस्ट को पार करती हुई एक छोटी रेलवे लाइन भी गई है। यह फ्रीबर्ग से अपर डैन्यूब प्रदेश को जाती है।

राइन-दर्शन

बेडेन तथा अल्सेस के राइन मैदानी पर्वतों के ऊपर जगह जगह पर गढ़ों के बहुत से भग्नावशेष हैं। उनकी घाटी में होहेन बाडेन का बिगड़ा हुआ मीनार है जिसके नाम पर ग्रेंराइलों का नाम पड़ा है। जब से नेपोलियन ने जर्मनी का पुनः संस्करण किया तब से राइन के दायें तट पर बेडेन का अधिकार चला आया था। होहेन बाडेन मध्य काल में बहुत सी लड़ाइयों का मैदान रहा है। अज की छोटी घाटी में न्यूबडेन का रिनायसा महल है। इसके नीचे उष्ण सोते हैं। इसी जगह एक छोटा नगर हो गया जिसका नाम बेडेन बाडेन है।

राइन मैदान के पश्चिमी पहाड़ियों से कार्ल्सरूहे तथा रास्टाट के सामने लौटेर तथा षवेन्च दो सहायक नदियां नीचे आती हैं। यह नदियां विभिन्न कालों में अलसेस की सीमा बनाती रही हैं। लूई चौदहवें के समय से ही लैराडायु को किला बन्दी फ्रांसीसियों ने की थी परन्तु नैपोलियन के समय में लौटेर सीमा बनाया गया था। इसी नदी के पीछे १८७० ई० में जर्मन सेना एकत्रित हुई थी। प्रथम युद्ध वीसेनबर्ग तथा

वर्थ स्थानों पर हुये। यह दोनों फ्रांसीसी सेना की रक्षा के हेतु युक्त थे। स्ट्रासबर्ग का घेरा डाला गया था और फ्लाउबर्ग पर अधिकार कर लिया गया था। जेबर्न के दक्षिण की ओर विरोधी सेना रोक दी गई थी। दक्षिण की ओर बर्गंडी द्वार से फ्रांसीसी सेना ने प्रवेश किया था। बेल्फोर्ट का किला युद्ध के अंत तक जर्मनों के हाथ से बाहर रहा। जब संधि हुई तो थीर्स ने जर्मन सेना को पेरिस में प्रवेश करने की आज्ञा दी यद्यपि बेल्फोर्ट फिर भी फ्रांस के हाथों में बना रहा। इसी कारण रोन बेसिन के अलसेस का सैराइगायु वाला भाग फ्रांसीसी बना रह गया। अब भी फ्रांसीसी राज्य का चिन्ह (रोन से राइन तक बर्गंडी द्वार होकर तथा मार्ने से राइन तक जबेर्न होकर) बना है। यहां की नहरें स्ट्रासबर्ग में राइन नदी में मिलती हैं और उसे फ्रांस के साथ व्यापारिक रूप से मिलाती हैं।

नेकेर तथा मेन

अपर जर्मन राइन की चौड़ी घाटी का पूर्वी खड़ा किनारा आगे उत्तर की ओर ब्लैक फारेस्ट तक लम्बा चला गया है। इस किनारे के कई भाग हैं जिसमें

फाल्टस तथा गुफाएँ हैं। यहां ब्लैक फारेस्ट के किनारे ग्रेनाइट के बने हैं। पूर्वी ढालों (जहां डैनूब के गद्गम सोते बहते हैं) बलुई पत्थर की मोटी परत जमी हुई है। क्रैचगाऊ वाला प्रदेश चूने के पत्थर वाली उपजाऊ भूमि का बना हुआ है। हीडेल वाल्ड है।

हीडेलबर्ग तथा आस्याफेनबर्ग स्थानों से नेकेर तथा मेन नदियों का उद्गम होता है। इन नदियों की प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करने के लिये डैनूब नदी का ध्यान रखना आवश्यक है। डैन्यूब नदी ब्रेगे तथा ब्रीगाच सोतों से मिल कर बनी है। यह फू़्वर्ग के पूर्व ब्लैक फारेस्ट के ऊँचे प्रदेश से निकलते हैं और डोनवेस चिङ्गेन स्थान पर मिलते हैं। मिलने के पश्चात् यह नदी टटलिङ्गेन से सिग्मारिङ्गेन तक घूमती हुई कंदरा बनाती है। इससे निकलने के पश्चात् डैन्यूब उत्तर पूर्व की ओर घूमती है आगे चल कर नदी फिर दक्षिण पूर्व की ओर घूमती है। इस भाग के पर्वत कुछ अधिक ऊंचे हैं और बोहेमिया की सीमा बनाते हैं। जूरा और इस पहाड़ी प्रदेश के मध्य बोहेमिया का वन है। इस वन में नाब नदी डैन्यूब की सहायक नदी है।

देश दर्शन

आस्ट्रेलियन आल्पस की घाटियों से निकलने वाली नदियां मैदान में पंखों की भांति फैली हुई हैं। इसलिये उत्तर-पश्चिम की ओर राइन बोडेन सागर में चली जाती है। इन्नेर तथा लेच नदियां उत्तर की ओर डैन्यूब में जाती हैं और इसार तथा इन नदियां उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ती हैं। जूरा पर्वतीय श्रेणी के मोड़ से डैन्यूब नदी आस्ट्रिया में उत्तर की ओर से नाव, आल्ट मुहल तथा ओर्टिंज नदियां प्रवेश करती हैं। आल्टमुहल तथा ओर्टिंज नदियां जूरा श्रेणी की कंदरा बनाती हुई पार करती हैं। डौफाइन आल्पस में ६ कंदराएं हैं जिनमें से तीन पश्चिम को और तीन पूर्व को मार्ग बनाती हैं। इनमें राइन नदी वाली कंदरा अधिक प्रसिद्ध है क्योंकि यहीं से स्विस तथा जर्मन आल्पस का विभाजन होता है। जर्मन जूरा पर्वत श्रेणी की समानान्तर पट्टियां हैं और जर्मन जूरा श्रेणी केवल एक पठार है। स्विटजरलैंड से स्वाबिया की ओर जाते जाते जूरा पर्वतीय श्रेणी नीची होती गई है स्वाबिया से आगे बढ़ने पर भी यह नीची होती गई है। स्विटजरलैंड के जूरा प्रदेश में वन हैं। पर जर्मन जूरा प्रदेश में

नदियों वाले भागों को छोड़कर और कहीं वन नहीं हैं।

नाब नदी का उद्गम स्थान फिचेल है। यह डेन्यूब नदी में राटिस्बोन स्थान पर आकर मिलती है। इससे आगे पूर्व की ओर बहने वाली बांहेमिया की एगेर, सैक्सनी की साले और फ्रैंकोनिया की मेन नदी है। इन नदियों के बेसिनों का चार पहाड़ियां अलग करती हैं। बवेरिया तथा उर्टेम्बर्ग की सीमा पर आर्टनिज तथा आल्टमुहनी नदियों का उद्गम होता है। केलहीम स्थान से लेडविक नहर डेनूब नदी से निकलती है। नेकेर की स्वाबिया तथा मेन की फ्रैंकोनियां घाटियां एक दूसरे के प्रतिकूल हैं। यह घाटियां प्राकृतिक तथा ऐतिहासिक दोनों बातों में एक दूसरे के प्रतिकूल हैं। यह दोनों घाटियां एक दूसरे से आवा-गमन साधनों से मिली हुई हैं।

रींगयु

अपर राइन नदी की रिफ्ट घाटी अपने अंतिम भाग में अपने ऊपरी भाग की ही भांति बने हुये प्राकृतिक प्रदेश द्वारा बन्द है। टौनूस तथा ओडेनवाल्ड के मध्य खुला स्थान है। उत्तर-पूर्व की ओर हेस्सियन द्वार है।

बनैले ढालों के ठीक नीचे अल्फर रीनगायु अंगूरी लताओं का प्रदेश है। नीचे आने पर राइन तथा मेन नदियां हैं और मेञ्ज तथा फ्रैंकफर्ट नगर स्थित हैं। थंडरहिल तथा मेलीबोकस पहाड़ियां हैं। इनके मध्य रिफ्ट घाटी का समतल मैदान स्थित है। पश्चिम की ओर नाहे की घाटी है। मेन की घाटी में स्पेसार्स के बनैले ऊँचे प्रदेश स्थित हैं। राइन रिफ्ट घाटी में दो सड़कें नीचे उतरती हैं। ओडेन वाल्ड तथा स्पेसार्ट की कंदराओं होती हुई दो और सड़कें आती हैं। क्रिजिग तथा मेन की सहायक नदी है। फ्यून्डा नदी वेसेर की सहायक है। वेहरायु के आगे लाहन घाटी है। राइन तथा मेन के संगम पर मेञ्ज नगर स्थित है। स्पाएर्स, वर्म्स तथा मेञ्ज रोमन नगर हैं। मेञ्ज की स्थित बड़ी लाभ दायक है जहां मेञ्ज की घाटी खुलती है वहां आस्चाफेन वर्ग नगर स्पेस्सार्ट के नीचे स्थित है। यहां चार मीनारों वाला गढ़ स्थित है। आस्चाफेनबर्ग तथा फ्रैंकफर्ट के मध्य आफेन बाच तथा हानायु के दो नगर स्थित हैं। ये नगर कारखाने वाले नगर हैं।

ओडेनवाल्ड के कोण पर डार्मस्टाट नगर स्थित

है। हीडेलबर्ग नगर की स्थित बड़ी सुन्दर प्राकृतिक है। प्राचीन काल में यह बड़ा ही प्रसिद्ध नगर था। नदी के तट पर होने के कारण मैनहीम नगर बहुत विख्यात हो गया है। यह दक्षिणी जर्मनी को समस्त प्रकार के सामान बांटता है। मैनहीम के सामने नदी के दूसरे तट पर लुडविगशाफेन नगर स्थित है। आजकल ये नगर बहुत प्रसिद्ध हैं। रीनगायु के सिरे पर नीडर-वाल्ड पर रुडर्सही के ऊपर जहां टौनस राइन से निकलती है। १८७० ई० की स्मृति में नैशनल मेमोरियल बनाया गया है। इसमें उस समय की घटनाओं के दृश्य मूर्तियों के रूप में दिखाये गये हैं।

मोसेल तथा ऊपरी म्यूज

अपर जर्मन राइन के पश्चिम एक प्रदेश है जिसमें राइन की वे सहायक नदियां बहती हैं जो नेकेर तथा मेन के तुल्य हैं। पर मोसल तथा अपर म्यूज नदियों के बेसिन कई बातों में स्वाबियन तथा फ्रैंकोनिया से भिन्न हैं।

मोसल तथा म्यूज के समस्त ऊपरी भाग के लिये लोरेन शब्द का प्रयोग होता है। यह एक पठार है।

यह फ्रांस तथा जर्मनी के मध्य बफर भूमि का काम करता है। यह जर्मनी से वोसजेज, हार्डट, स्चिस्टोसे द्वारा अलग है तथा फ्रांस से भी राइनवार्ड द्वारा अलग है। ये नदियां लोरेन के अर्थ शास्त्रीय जीवन में अलग अलग सहायता प्रदान करती हैं। चीर्स तथा सेभोय म्यूज की सहायक नदियां हैं। सोलहवीं, सत्रहवीं सदी में म्यूज घाटी फ्रांस तथा जर्मनी के मध्य सीमा बनाती थी।

लोरेन प्रांत की मोसेल केन्द्रीय नदी है। म्यूर्थे, सार, आर्नेर, सावेर आदि मोसेल की सहायक नदियां हैं। नैसी, मेज और ट्रीर नगर इसके किनारे स्थित हैं।

रोमनकाल में गाल के राइन सीमा का अपर मोसल का महत्वपूर्ण स्थान था। भूमध्य सागर से उत्तर की ओर जाने वाली प्रधान सड़कें इसी भाग होकर जाती हैं। यह सड़कें रोनघाटी से ल्योन, सेओन घाटी से चालोन्स, लोंगर्सघाटी से म्यूजघाटी और फिर टाउल मोसल घाटी को जाती हैं।

पश्चिमी राइन लैण्ड का इतिहास दूसरे शब्दों में मेन्ज, कोलोन तथा ट्रीर नगरों का इतिहास है। रोमन

काळ में अपर जर्मनी के केन्द्र मेञ्ज नगर था। लोअर जर्मनी का केन्द्र कोलोन नगर था इन दोनों के मध्य अपर बेल्जिका प्रदेश था। जिसकी राजधानी ट्रीर थी। सार प्रान्त में बहुत, सी नहरें अब बन गई हैं जिससे यह प्रदेश बड़ा धनी हो गया है। सार प्रान्त को कोयला सार नदी द्वारा कोल्मार तथा मूलहासेन के कारखानों को भेजा जाता है। स्विटज़रलैण्ड तथा जर्मनी के यहां का कोयला रेल द्वारा जाता है। मेन नगर की भाषा जर्मन है पर उसके चारों ओर प्रदेश की भाषा फ्रांसीसी है। जर्मन लोरेन तथा लक्सेमबर्ग के ग्रैंडडची में लोहे की खाने बहुत हैं। यद्यपि लैण्डस-टुहलर ब्रूच किसी नदी की घाटी नहीं है तो भी वह बड़ा ही महत्वपूर्ण प्रदेश हैं। इस प्रदेश में चारों ओर से मार्ग आते हैं और इसी प्रदेश होकर चारों ओर मार्ग गये हैं।

अपर आहे नदी पर ओबेस्टीन नगर स्थित है। यह नदी ऊंची चट्टानों के मध्य होकर बहता है जिनके ऊपर पुराने गढ़ों के भग्नावशेष स्थित हैं। नदी के उद्गम पर २ हज़ार फुट ऊंची स्चौम बर्ग नामक

ज्वालामुखी पहाड़ी है। यहां सेंट जोहान बुरबाच-मल-स्टाट तथा सार ब्रूक नगर हैं जिनकी जन संख्या तीस हज़ार से अधिक है।

सार ब्रूक में ही १८७० ई० में जर्मनी की एक सेना का दाहिना पक्ष एकत्रित हुआ था। बाम पक्ष राइन घाटी में लैण्डाय़ु तथा वीसेन बर्ग के मध्य स्थित हुआ था।

मौसल के कोण पर मेज़ नगर सील्ले के संगम पर स्थित है। तोपों के प्रयोग के पूर्व यह स्थान सुरक्षा के ध्यान से सैनिक महत्व का था। पहले इसके चारों ओर ऊंची दीवार बनी थी अब दीवार के स्थान पर किलों की एक मुद्रा सी बना दी गई है। ये किले चारों ओर पहाड़ियों पर स्थित हैं। नगर के केन्द्रीय भाग में एक गोथिक कैथीड्रल है।

मोसेल्ल की सहायक नदियां सावेर तथा सार हैं। यहां यह नदियां मोसेल्ल में मिलती हैं। वहां डीडेन होफेन नगर है। इन दोनों नदियों के मध्य हीदेन मीनार है जिसे रोमन लोगों ने बनाया था। इसे इंगेल भी कहते हैं। ईगेल से ७ मील नीचे ट्रीर नगर है।

ट्रीर के नीचे कील घाटी है। यहां कोलोन से रोमन सड़क आती है। प्राचीन समय में ट्रीर एक बड़ा ही प्रसिद्ध नगर था। यह राजधानी भी रह चुका है।

सावेर बेसिन में ग्रैन्ड डची तथ प्रशन राइन प्रान्त स्थित हैं। आल्सेटी नदी पर लक्सम बर्ग नगर स्थित है। १८६८ ई० में इस नगर के चारों ओर की दीवार गिरा दी गई थी क्योंकि प्रशा तथा फ्रांस में यहां सीमा सम्बन्धी झगड़ा उठ खड़ा हुआ था। बाद में स्पेनिश गद्दी के लिये झगड़ा हो ही गया। लक्सेमबर्ग का राज्य अब भी शेष रह गया है जो स्वतंत्र है। पर यहां की रेलवे, डाक तथा चुंगी पर जर्मनी का अधिकार है।

ट्रीर से २२ मील की दूरी पर न्यूमाजेन का इम्पीरियल रोमन महल था जिसके सामने खोद कर ट्रीर के अजायब घर में रक्खे गये हैं। इसके आगे पीसपोर्ट, आनेबर्ग, बर्नकैसेल तथा आथ नगर स्थित हैं जहां की शराब बहुत प्रसिद्ध है। बर्नकैसेल से कोचेम की सीधी दूरी १६ मील है। पर नदी द्वारा दूरी ५० मील है। पहाड़ियों पर प्राचीन दुर्गों के भग्नवशेष है जिनका

सम्बन्ध ऐतिहासिक दृष्टि से ट्रीर के साथ है। यहीं समीप ही ग्राफेनबर्ग का क़िला है। इसके नीचे ट्राबेन तथा ट्रारबाच छोटे नगरों के निवासी प्रोटेस्टेंट हैं। इनसे और नीचे विनिनजेन नगर है। मोसेल्ल की घाटी में अधिकांश रोमन कैथलिक लोग हैं।

रइान गार्ग

राइन स्चिस्ट पठार में बहुत से गोर्ज (कंदरायें) हैं। बेङ्ग नगर से कोनिग्सविंटर लगभग ५० मील दूर है यहां राइन नदी की कंदरा है। इसको कोबलेंज स्थान पर काटती हुई एक दूसरी कंदरा है। इस कंदरा का पानी दक्षिण पश्चिम की ओर मोसल्ल द्वारा और उत्तर पूर्व की ओर लाह्म नदी द्वारा बहता है। कोबलेंज नगर मोसेल्ल-राइन के संगम के कोण पर स्थित है। यह नगर नदियों, सड़कों तथा रेलों का चौराहा है।

नदी द्वारा यात्रा करने पर यात्रियों को बिंजेन की कंदरा में प्रवेश करना पड़ता है। इस कंदरा का मार्ग उथल-पुथल है। नदी संकरी है और बीच बीच में द्वीप हैं। नावें घसीट कर ले जाना पड़ता है। परन्तु दृश्य

बड़े ही सुन्दर प्रतीत होते हैं। नदी का बहाव तेज़ है। नदी में लाक बने हैं जिससे नावें ऊपर उठाई जाती हैं। बिंजर लाक पर पानी आगे पीछे दौड़ता रहता है। अब नदी में जो बाधक चट्टानें थीं वह हटा दी गई हैं।

राइन नदी के उत्तरी घुमाव पर जहां वह एक कंदरा में प्रवेश करती है वहीं नोह नदी आकर मिलती है। नोह और राइन नदी के द्वारा बने कोण पर बिंजेन का प्राचीन नगर स्थित है। बिंजेन स्थान पर ही राचसबर्ग की पहाड़ी आरम्भ होती है। राचसबर्ग नगर की जन संख्या अधिक नहीं है तो भी यह स्थान प्रसिद्ध है। यहां सात मेहराबों वाला पुल तथा क्लोद का क़िला है। राइन के दूसरे तट पर रीनफेल्स का उजड़ा हुआ किला है। यहीं कंदरा के मुंह पर म्यूज़ मीनार थी। इस मीनार के सम्बन्ध में दंत कथा प्रसिद्ध है। कहते हैं कि दुष्ट एलेक्टर हाटो ने अकाल पड़ने पर सब नाज एकत्रित किया और जब उसकी प्रजा ने उससे रोटी का सवाल किया तो उसने उन्हें भट्टी में झोंकवा दिया। इस पर मेज नगर के चूहों ने उसका

पीछा किया और वह बेंजने भाग कर गया फिर भी चूहे पीछे लगे रहे। आखिर वह द्वीप में स्थित मीनार में चला गया और अपनी जान बचानी चाही पर चूहों ने पीछा न छोड़ा और वहां जाकर उसे खा डाला।

प्राचीन काल में बेंजन नगर साम्राज्य का एक एक स्वतंत्र नगर था और राइनिश लीज का सदस्य था। राइनिश लीग का केन्द्र मेञ्ज था। जब १८१४ ई० में वियना नगर में जर्मनी का पुनर्निर्माण हुआ तो बेञ्जेन तथा मेञ्ज दोनों नगर हेस-होर्म स्टाट में मिला दिये गये। नीडेरवाल्ड के सामने टौनूस के अंत में ऊंचाई पर १८७०-७१ की स्मृतियां बनी हैं। जिससे जर्मनी के उस समय के इतिहास का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

बेञ्जन से कोबलेञ्ज तक राइन कंदरा की लम्बाई ४० मील है जिसके दोनों तटों पर एतिहासिक गढ़ तथा नगर स्थित हैं। इन किलों में प्रथम रीन्स्टीन का किला है। इसके आगे फेल्केनबर्ग और सूनेक स्थान हैं। इनके आगे दाहिने किनारे पर विस्पर घाटी के मुहाने पर लोर्च का छोटा नगर स्थित है। यहां से लोर्च

नोचिल गढ़ तक डेरिल की सीढ़ी बनी है। कहते हैं इसी सीढ़ी मार्ग से लांच का एक सूरमा चढ़ा था और यहां उसने अपनी प्रेमिका को पाया था।

इसके आगे पैलेटाइन काउन्टस की सीमा है। यहां बाएं तट पर बाचराय तथा दाहिने पर कौब नगर है। राइन के केन्द्र में फ्फालज नगर है। एक द्वीप पर स्थित है। उसके पश्चात् बाएं तट पर ओबेर वेसेल नगर है। इसके ऊपर स्थानबर्ग के भग्नावशेष हैं।

यहां से तीन मील आगे काटजेनेल्न काउन्टस का प्रदेश आरम्भ हो जाता है। यहां दाहिने तट पर चार पांच सौ की ऊंचाई पर लुर्री चट्टान है। कहते हैं कि इस चट्टान पर एक परी रहा करती थी जिसे देखकर मल्लाह मोहित हो जाते थे और उन्हें अपनी नाव चलाने में धोका हो जाता था। यहीं बाएं तट पर सेंट गोर-शौसन के छोटे सुन्दर नगर स्थित हैं। सेंट गोर के ऊपर रीनफेलस के भग्नावशेष हैं। सेंट गौर शौसन के ऊपर कैट का किला स्थित है। इससे थोड़ा भीतरी प्रदेश की ओर रीचेन बर्ग का किला है।

सेंटगौर के आगे ट्रीर का प्रदेश आ जाता है।

यहां दाहिनी ओर मौसे के गढ़ के भग्नावशेष हैं। यहीं नीचे की ओर स्टेरेन बर्ग तथा लीबेन्स्टीन के कैसेल हैं। आगे चलकर बोपार्ड का नगर स्थित है। यहां पर कंदरा दोहरा मोड़ बनाती है। आगे चलकर बाएं तट पर कोनिग्सतुहल है जो राइन प्रदेश के एलेक्टरों का का बहुधा समागम होता था। इस स्थान के कुछ ऊपर रीन्स स्थान है। नीचे की ओर कापेलेन नगर है। दूसरी ओर लान्स्टीन है। यह मेञ्ज के आर्क बिशप की जायदाद थी और आगे चलकर कोबलेञ्ज नगर आता है जिसके बाईं ओर पहाड़ी के ऊपर स्टोल्जेन-फेल्स का कैसेल है। इसी के सामने लान्ह नदी का मुहाना तथा छोटा डेल्टा है। यहां बर्लिन से मेज जाने वाली रेल का पुल बना है। कोबलेञ्ज स्थान पर राइन नदी के ऊपर पुल बना हुआ है। कोपलेञ्ज नगर में एम्परर विलियम प्रथम का स्मारक है। यहां तीस साला युद्ध के समय युद्ध हुआ था। समीप ही न्वीड का छोटा मैदान है। न्यूवोड के आगे पुनः कंदरा आरम्भ हो जाती है।

इस कंदरा में दाहिनी तथा बाईं ओर से सहायक

नदियां आकर मिलती हैं। इस भाग में ज्वालामुखी पर्वत हैं। तथा नदियों के डेल्टा हैं। कई एक पहाड़ी सोते भी हैं। यहां सात छोटे छोटे ऊँचे पहाड़ हैं। जिनमें रोलैंडेक अधिक प्रसिद्ध है। रोलैंड चार्ल्यामेन का योद्धा था। रोलैंड काउन्ट की पुत्री के प्रेम में फंस गया था पर उसे चार्ल्यामेन ने बुला भेजा। लड़की का नाम हिल्डेगुन्ड था। जब रोलैंड अधिक दूर तक वापस न आया तो वह नानेनवर्थ चली गई और छिप गई। रोलैंड ने आकर तलाश किया और न मिलने पर पहाड़ी के ऊपर जाकर एक गढ़ बनवाया और उसी पर से अपनी प्रेमिका को देखने लगा। जब उसे पता चला कि वह मर गई है तो उसने भी प्राण त्याग दिये। यहां के सातों पर्वतों का दृश्य देखने योग्य है। इन पर्वतों की प्राचीन वस्तुएँ म्यूनिक में ले जाकर रक्खी गई हैं।

आगे चल कर गीचेन नगर है। गीचेन के नीचे लान घाटी में वेज्लार स्वतंत्र नगर है। प्राचीन काल में यह एक प्रसिद्ध नगर था। लान नदी में बहुत से लाक बने हुये हैं। वेजलार और लिम्बर्ग के मध्यवर्ती प्रदेश

का लोहा इसी नदी होकर दूसरे स्थानों को भेजा जाता है। यहां पहाड़ियों के ऊपर जो क़िले बने हैं उनका गहरा सम्बन्ध प्राचीन घटनाओं से है। नासू तथा एम्स घराने का प्राचीन इतिहास इन्हीं दुर्गों से पता चलता है।

एम्स नदी एम्स नगर के समीप ही राइन से मिलती है। मालबर्ग नगर बनों के मध्य पहाड़ी पर स्थित है।

अन्ह नदी के मुहाने के ऊपर रेमेजेन स्थान पर एक टूटी दीवार तथा टूटा-फूटा गढ़ है जिसे लैंडक्रोन कहते हैं। इसके नीचे अपोलोनारिस सोते बहते हैं। यहां से ७ मील की दूरी पर न्यूनन्ह घाटी है। जहां उष्ण जल के सोते हैं। बर्लिन से ट्रीर जाने वाली रेलवे लाइन कील घाटी होकर जाती है जिसमें बहुत से पुल तथा सुरंगे हैं। इस घाटी में जेरोल्स्नीन तथा कील बर्ग के सुन्दर नगर हैं। यहां मोसेनबर्ग की ज्वालामुखी पहाड़ी है जिसमें ज्वालामुखी के चार मुख हैं। इसमें दक्षिण से लावा निकला करती है। ज्वालामुखी बेसिनों का स्थानीय नाम मारे है।

राइन-दर्शन

लोअर जर्मन राइन

बोन नामक स्थान पर राइन नदी निचले जर्मन प्रदेश में प्रवेश करती है। इस भाग में कई एक नदियां बहती हैं। यहां कलोने सावेरलैंड, एग्गे पहाड़ी तथा टयूटो बर्गर वन स्थित हैं। वेस्टो फीलिया का मैदान भी यहीं हैं जहां होकर टयटो बर्गर की ६० मील लम्बी पहाड़ी जाती है। राइन का निचला प्रदेश दो कोण के आकारों वाले खाड़ी प्रदेश बनाता है। पहले के केन्द्र में कोलोन का प्रसिद्ध नगर तथा दूसरे के केन्द्र में मुन्स्टेर का प्रसिद्ध नगर स्थित है। रुहर तथा लिप्पे नदियां राइन की सहायक नदियां हैं। रुहर नदी अपने प्रसिद्ध रुहर प्रदेश में होकर बहती है। यह प्रदेश अपनी खनिज सम्पत्ति के लिये बहुत प्रसिद्ध है। यह कोयले तथा लोहे की बड़ी बड़ी खाने वर्तमान हैं। यह प्रदेश बड़ा ही धनी है सचमुच ही यही फ्रान्स तथा जर्मनी के मध्य झगड़े की जड़ बना रहा है।

रुहर के दक्षिण लेन्ने तथा अप्पेर दो नदियां निकलती हैं। लेन्ने नदी रुहर नदी में मिल जाती है और अप्पेर नदी घूमती हुई चक्कर काटकर राइन से

मिलती है।

मध्य काल से फ्रांसीसी क्रान्ति काल तक इस भाग में चार मुख्य प्रदेश थे जिन्हें, कोलोन के ऊपर और नीचे का भाग जूलिच की डची बर्ग की डची तथा मार्क की काउंटी कहते थे। जर्मन जिलों के भीतर ही राइन नदी हालैंड की सीमा में प्रवेश कर जाती है। यहां वेस्टफालिया की डची तथा पेडेर बोर्न के बिशप-रिक स्थित थे।

राइनलैंड तथा वेस्ट फीलिया प्रदेश प्रचान इतिहास के निर्माता हैं और अब वहां बड़े बढ़े कारखाने हैं।

स्वतंत्र नेदरलैंड के बाहर समस्त ओअर राइनलैंड के मध्य में कोलोन नगर स्थित है। सन् ईस्वी के अरम्भ होने के पूर्व ही यह नगर प्रसिद्ध हो गया था। क्योंकि उस समय भी यह जल तथा स्थल मार्गो का चौराहा था। कोलोन में राइन नदी पश्चिम की ओर घूमती है। यहां नदी की चौडाई कम है। साथ ही साथ नदी में एक द्वीप भी है। यहीं पर रोमन लोगों ने जर्मन उबाई को नदी पार करने पर मजबूर किया था। वे लोग दूसरे तट पर गये और वहां अपना आल्टर बनाया था

जिससे यह स्थान धार्मिक बन गया। इसी कारण कोलोन प्रान्तीय राजधानी भी बन गया था। जब ईसाई राज्य हो गया तो वहां एक विशपरिक स्थापित हुई। बाद में रिपवारियन फ्रैंक लोग उसके बाएं तट पर बस गये थे।

जब चार्ल्समैन ने एचेन को अपनी राजधानी बनाया तो कोलोन से ही उसकी आक्रमणकारी सेना जाती थी। बाद में कोलोन नगर एक स्वतंत्र इम्पीरियल नगर बन गया था और हंसियाटिक लीग में सम्मिलित हो गया था। उस समय भी यह व्यापारिक केन्द्र था। संसार के विभिन्न भागों से यहां सामान आता था और फिर यहां से दूसरे स्थानों को भेजा जाता था। उस समय भी इस नगर का सम्बन्ध बाहरी नगरों से हुआ था। रिफारमेशन काल में कोलोन नगर की अवनति हुई पर जब १८१५ ई० में प्रशा का राइन प्रान्त बनाया गया और राइन नदी में नावें स्वतंत्रता पूर्वक चलने लगीं तो यह नगर फिर उन्नति करने लगा। १८७० ई० के पश्चात् नगर के चारों ओर की दीवारें गिरा दी गई और चारों ओर गढ़ों का एक वृत्त सा बना दिया

गया। इस समय कोलोन नगर एक व्यवसायी केन्द्र बन गया है और पूर्वी राइनिश कोयला क्षेत्र तथा पश्चिमी राइनिश कोयला क्षेत्र की सहायता करता है। यह उत्तरी योरुपीय रेलवे लाइनों का चौरास्ता बन गया है। पेरिस, बर्लिन, इंगलैंड, नेदरलैंड, इटली तथा वियना आदि स्थानों से रेलवे लाइने यहां होकर आती जाती हैं। कोलोन से ऊपर तथा नीचे लगभग समान दूरी पर बोन तथा न्यूस के छोटे रोमन स्टेशन स्थित हैं।

नदी के दायें तट पर डसलडार्फ का आधुनिक प्रसिद्ध नगर स्थित है। डसलडार्फ नगर बर्ग की डची की राजधानी था। आज कल यह नगर राइन नदी का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। बर्ग की डची में अप्पेर तथा धून नदियों के बेसिन हैं। अप्पर नदी पर ही बर्ग नगर स्थित है। अप्पर की घाटी के सिरे पर रेम्स्चीड तथा सोलिङ्गन नगर स्थित हैं। यह बर्ग के उत्तर स्थित हैं और रेलवे पुलों द्वारा मिले हुये हैं। सोलिंजेन में चाकू तलवार आदि आरम्भ काल से ही बहुत अच्छे तयार किये जाते हैं। रोम्स चीड के उत्तर नदी के तट पर

बनैले तो प्रदेश में बरमेन तथा एल्बेरफील्ड के नगर छः मील तक फैले हैं। इन दोनों की जन-संख्या ४ लाख से ऊपर हैं और यहां प्रत्येक भांति के कपड़े तयार किये जाते हैं। डसलडार्फ बन्दरगाह इनके पश्चिम स्थित है वहीं से इनका सामान बाहर भेजा जाता है। रुहर नदी के उत्तर उसके मुहाने से १० मील चौड़ी एक पट्टी है जिसमें बहुत अधिक खाने पाई जाती हैं। खानों के कारण बहुत से कारखाने तथा नगर स्थित हैं। इस प्रदेश का बन्दरगाह सम्मिलित डुइसबर्ग रुहरोर्ट तथा मीडरीच है जिनकी सामूहिक जनसंख्या २ लाख है। डुइसबर्ग एक प्राचीन स्थान है। जिरडिमर्फेंटर की उत्पत्ति हुई थी। यहीं पर क्रप का तोपखाने वाला कारखाना है जिसमें ५ हजार व्यक्ति काम करते हैं। डोर्ड-मुंड भी एक प्राचीन नगर है अब वहां बड़े बड़े कार-खाने हैं तथा वह एक कारखाने वाला बड़ा नगर बन गया है।

कोलोन से कुछ मील उत्तर की ओर नदी तट पर जोन्स नगर स्थित है। डसलडार्फ के उत्तर कैसेर्सवर्थ नगर स्थित है। लिप्पे तथा राइन नदी के संगम पर

बेसेल नगर स्थित है। यहां एक सुन्दर गोथिक चर्च है क्वीन मैरी के समय के निकाले गये प्रोटेस्टेन्टों को यहीं शरण मिली थी। यहीं लोअर जर्मन राइन पर एक्सैन्टेन नगर स्थित है जहां सीजफ्रीड का जन्म हुआ था। इस नगर के उत्तर तथा दक्षिण एक जोड़े नगर स्थित हैं। ये काल्कर तथा क्लोव (उत्तर में) और रीनवर्ग तथा मोस (दक्षिण में) नगर हैं।

एरेफ्ट तथा नीर्स राइन की सहायक नदियां हैं। नीर्स नदी पर मुन्स्चेन-ग्लाडवाच तथा सेल्डेर्च और गोच नगर स्थित हैं।

कोयले के क्षेत्र के अंतम डर्न की प्रधान शाखा के समीप ऐचेन नगर स्थित है। यह एक बड़ा कारखाने वाला नगर है। इसकी जनसंख्या लगभग २ लाख है। नगर के मध्यवर्ती भाग में प्राचीन एतिहासिक स्मृतियां हैं। उष्ण जल के सोतों के कारण ही इस नगर की स्थापना रोमन लोगों ने की थी। यहां फ्रैंकिश राजा बहुधा रहा करते थे। यह प्रधान मार्ग में स्थित था। इसी कारण यहां पूर्वी तथा पश्चिमी फ्रैंक राज्यों के मध्य चार्ल्यामेन का महल तथा केन्द्र था जिसके अंतर्गत

समस्त योरुपीय टयूटानिक तथा रोमन देश संयुक्त हो गये थे। यहां अब भी अष्टभुजाकार चार्ल्यमेन का बनवाया हुआ गिरजाघर खड़ा है। इसके स्तम्भ संगमरमर के हैं। मध्यवर्ती भाग में एक मकबरा वाली शिला है जिस पर कारोलोमागनो शब्द अंकित हैं। इसी चर्च में चार्ल्यमेन का सिंहासन है। इसी सिंहासन पर होली रोमन साम्राज्य के तीस महाराजाधिराजों की राजगद्दी हुई थी।

लोअर म्यूज़ तथा स्चेल्त नदियां

इन नदियों के प्रदेश के उत्तर में नेदरलैंड है जिसके पूर्व में निचला प्रदेश तथा फ्रांसीसी आरटवाएस प्रदेश और पिकार्डी पश्चिम में है। दक्षिण की ओर पूर्व की तरफ लोरेन प्रदेश और पश्चिम की ओर चम्पाने प्रदेश है।

इस प्रदेश में म्यूज, स्चेल्ट मार्ने ओयसे, सीने, सोम्मे, नीचे राइले, वेहे, आम्बमेवे, आउर्थे, रूपेल आदि नदियां हैं तथा इन नदियों की घाटियां बड़ी उपजाऊ हैं।

इनकी घाटियों में खनिज सम्पत्ति भी बहुत है इसी

कारण प्रसिद्ध कारखाने वाले नगर इनके बीच बसे हैं।

लोअर म्यूज तथा स्चेल्ट नदियों के प्रदेश में निचला प्रदेश, फ्लैण्डर्स, आर्टवाएस का प्रान्त, उत्तरी फ्रांस का खरिया मिट्टी वाला प्रदेश, आयसेसे सीने तक वाला नहरी प्रदेश, सोपे से उत्तर-पश्चिम वाला समुद्र तक नहरी प्रदेश, पिकार्डी प्रदेश लोरेन प्रदेश, कम्पाने प्रदेश अर्डनीस क्षेत्र, सम्ब्रे, म्यूज घाटी, कैम्पाइन जिला हेनाल्ट प्रदेश, स्पा प्रदेश, चार्लेरोई का क्षेत्र तथा मोन्स और वेलेनसीनसे के प्रदेश स्थित हैं।

इन क्षेत्रों में बड़े बड़े कारखानों वाले नगर जैसे कैले, नामूर, लीज फेंट, ब्रूसेल्स, आस्टेन्ड, डंकिर्क, टर्नयूज़ेन, ट्रेंट, लिल्ले, ब्रूगेस, नीरविंडेन, रैमिलीज़, फ्लूरूज़, लिग्नी, वावेर, क्वाट्रेब्रास, जेमापेस, माल्प्ला-क्वेर, फान्टेन्वाय, ओडेननार्डे, मास्ट्रीच, वेरवीर्स, स्पा, चार्लेरोई, मोन्स, मेज़ीरेस तथा सेदान आदि प्रसिद्ध नगर स्थित हैं।

प्राचीन काल से ही यह प्रदेश बड़ा प्रसिद्ध रहा है। बेल्जियम, हालैण्ड, फ्रांस तथा जर्मनी की सीमाएं यहीं पर मिलती हैं। यह प्रदेश इंगलैण्ड का समीपवर्ती

है अतः जब कभी भी इस प्रदेश के बारे में कोई लड़ाई हुई तथा सभी शक्तियों को मजबूरन उसमें हाथ बटाना पड़ा इसी कारण जब कभी फ्रांस या जर्मनी ने इस भाग पर अपना अधिकार जमाना चाहा तो एक बड़ी योरुपीय लड़ाई खड़ी हो गई। १८७० ई० में यही बात हुई थी नेपोलियन के युद्ध में यही बात हुई और उसी में वाटरलू की बड़ी लड़ाई में नेपोलियन की हार हुई। उसके पश्चात् १९१४ ई० में जब जर्मनी ने इस प्रान्त की ओर आक्रमण किया तो सभों को उसके विरुद्ध खड़ा होना पड़ा जिससे महायुद्ध खड़ा हो गया। द्वितीय महासमर १९४० में भी यही बात हुई जब जर्मनी ने हालैण्ड विजय की तो वह इसी मैदान होकर पेरिस की ओर बढ़ा। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह क्षेत्र ऐतिहासिक तथा सामाजिक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण है।

डेल्टा

राइन नदी का आधुनिक डेल्टा हालैण्ड की सीमा से आरम्भ होता है यद्यपि इसका बंटवारा दो सौ वर्ष पूर्व जर्मनी में हुआ था। राइन नदी डच सीमा के भीतर दो भागों में विभाजित हो जाती है। एक का

नाम वाला और दूसरे का पैनरेडेन नहर है। राइन नदी का डेल्टा एक ऐसे स्थान पर स्थित है जहां समुद्री ज्वार दो धाराओं होकर पहुँच सकता है। यह ज्वार स्काटलैण्ड के उत्तर होकर तथा इंगलिश चैनल होकर आते हैं। ज्वार भाटा की प्रतिद्वंदिता का प्रभाव डेल्टा के मुहाने पर साफ तौर पर पता चलना है जहां पर नदियां विभाजित होती है।

राइन नदी का डेल्टाई प्रदेश बालू की पहाड़ियों के दो ज़िलों का बना है। उत्तरी भाग में वेलूवे का ज़िला तथा दक्षिण की ओर कैम्पाइन का ज़िला स्थित है। इन दोनों के मध्य बाढ़ से डूबा हुआ दस मील का चौड़ा मैदान है।

बालू के भीटों वाले तट के चार भाग हैं। पहले भाग के भीटे लगातार हैं और उनमें किसी भांति का अंतर नहीं है। यह कैले से ओस्टेन्ड तक है। दूसरे भाग में राइन, मास और स्चेल्ट नदियों की स्चुमरियां स्थित हैं जो लम्बे द्वीपों द्वारा समकोण रूप में समुद्र तट से मिली हैं और आपस में विभाजित हैं। तीसरा भीटों वाला वह भाग है जिसमें केवल एक स्थान पर अन्तर

आ जाता है। यह हालैंड के हुक से हेल्डेर तक फैला हुआ है। यह अंतर उत्तर की ओर कैम्पेर डाऊन भीटे के आगे है। चौथा भाग भीटों की वह पट्टी है जो जीलैंड के भोटों की भांति द्वीपों के ऊपर स्थित है। यह समुद्र तट की समानान्तर चली गई है। इसके सामने फ्रीजलैंड स्थित है।

हालैंड के इतिहास में ज्वेडरजी के निर्माण होने की घटना अद्वितीय है। यह घटना दो सौ वर्षों (तेरहवीं तथा चौदहवीं सदी) में घटी थी। रोमन काल में राइन डेल्टा में फ्रीजियन मल्लाह (मल्लुए) तथा सैल्टिक जाति के फ्रैंक किसान रहते थे। बाद में जर्मन, सैक्सन जाति के लोग आकर बस गये। आरम्भ कालीन हालैंड एक हान्टलैंड या हाउटलैण्ड या बनैला प्रदेश था नेदरलैण्ड की उन्नति शीघ्रता के साथ आधुनिक काल में हुई है जब कि फ्रांस तथा स्पेन केन्द्रीय राज्य सत्ता की स्थापना हुई जब उन्होंने छोटे छोटे स्थानी फ़्फ़्मिश नगरों को दबा दिया। उसके पश्चात् धीरे धीरे वहां राज्य की स्थापना हुई।

जब १९१४ की बड़ी लड़ाई समाप्त हुई तो योरुप

ने नेदरलैण्ड के राज्य की स्थापना की जिसमें हालैण्ड और बेल्जियम देश सम्मिलित किये गये। इससे पूर्व भी बर्गंडी घराने के शासन काल में यह दोनों देश एक सूत्र में बंधे थे।

राइन नदी योरुप की एक अद्वितीय नदी है। यह नदी अपने योरुपीय क्षेत्र में बरगद के वृक्ष की भांति फैली हुई है। इसकी शाखें तथा सहायक नदियां समस्त प्रदेश में जाल की भांति बिछी हैं। इसकी शाखों के दोनों तटों पर बांध बने हैं क्योंकि वहां की भूमि समुद्र धरातल से नीची है। हालैण्ड की तटीय भूमि समुद्र धरातल से नीची है इसी कारण बांध बनाये गये हैं। जिससे समुद्र का पानी भीतर प्रवेश न कर सके। राइन नदी को चाहे हम स्विसरिपब्लिक प्रान्त में देखें, चाहे डच रिपब्लिक प्रदेश में देखें, या मध्यवर्ती भाग के नगरों बास्ले, स्ट्रासबर्ग मेञ्ज, कोबलेञ्ज और कोलोन नगरों को देखें, प्रत्येक स्थान पर निगाह डालते हम एक ही निर्णय पर आते हैं कि राइन नदी योरुप की अद्वितीय नदी है। वाल्गा तथा डैनूब नदियां इससे बड़ी नदियां हैं। टाइबर सीने और टेम्स प्रान्तीय या

राइन-दर्शन

शी नदियां हैं। इनमें से कोई भी नदी इतनी संहर्षनीय हीं है जितनी की राइन नदी है। यह नदी स्विस, च, फ्रैंको तथा जर्मन प्रदेशों में होकर बहती है और सभी को यह समानरूप से लाभ पहुँचाती है। योरुप की कोई भी अन्य नदी इसकी तुलना नहीं कर सकती है।

